सितम्बर 2015

दादावाणी

कीमत ₹ 10

इस जगत् में यदि कोई ज़बरदस्त नुकसान है तो वह निंदा करने में है। इसलिए किसी की भी निंदा करने में मत पड़ना। किसी की बात नहीं करनी चाहिए। किसी की भूलें नहीं देखनी हैं।

संपादक : डिम्पल महेता
वर्ष : १० अंक : ११
अखंड क्रमांक : ११९
सितम्बर २०१५

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन : (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Owned by
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Published at
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Total 32 pages including cover

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल
भारत : ७५० रुपये
यू.एस.ए. : १५० डॉलर
यू.के. : १०० पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यू.एस.ए. : १५ डॉलर
यू.के. : १० पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम
से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

निंदा व टीका के जोखिम

संपादकीय

जीवन व्यवहार चलाने के लिए वाणी एक महत्व पूर्ण साधन है। यह वाणी हमारे द्वारा बोले जानवाले शब्दों में व्यक्त होती है। लेकिन कभी-कभी जाने-अन्जाने वाणी का अपव्यय हो जाता है। वाणी का अपव्यय अर्थात् उल्टी (गलत) वाणी का प्रयोग करना और दुर्व्यय अर्थात् वाणी का प्रयोग गलत जगह पर करना। अब ऐसी उल्टी या सीधी वाणी किस वजह से बोली जाती है, इसका रहस्य परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ने बताया है। दैनिक जीवन में स्थूल रूप से हमें उल्टी वाणी के विविध रंगरूप दिखाई देते हैं। जैसे कि नेगेटिव बोलना, अपशब्द, ताने मारना, निंदा, टीका, बुराई करना, तिरस्कार, *तरछोड़,* कठोर भाषा, तंतीली भाषा वगैरह।

प्रस्तुत अंक में वाणी से खड़े होनेवाले निंदा नामक दोष का सूक्ष्मता से विवरण किया गया है। जैसे निंदा क्या है, निंदा और टीका में क्या फर्क है, निंदा किस वजह से की जाती है, उसके पीछे के अभिप्राय, निंदा का स्पर्धा से संबंध, निंदा ही हिंसक भाव, अवर्णवाद-गाढ़ निंदा वगैरह। मूलत: निंदा के दोष में अहंकार का ही गुण है।

किसी भी व्यक्ति की निंदा कब की जाती है? जब उस व्यक्ति के बारे में (लिए) उल्टे, नेगेटिव अभिप्राय हों तो। ऐसे अभिप्रायों का कारण उस व्यक्ति की ओर से अपमान हुआ हो, उसके प्रति मोह की मार पड़ी हो, *धार्यु* नहीं हुआ हो। खुद का नुकसान या लोभ के कारण नेगेटिव अभिप्राय पड़ (हो) जाते हैं, फिर राग-द्वेष की परंपरा बन जाती है और फिर स्थूल रूप से निंदा के स्वरूप में बाहर निकलती है। अर्थात् मूल में अहंकार काम कर जाता है।

अध्यात्म मार्ग में निंदा बहुत बड़ा बाधक दोष है, जो दैनिक जीवन में आसानी से एक रूप हो गया है। सबसे पहले तो यह समझना है कि यह दोष कब हो जाता है और फिर इसे पकड़ना बहुत कठिन है। निंदारूपी दोष के निर्माण के तले अध्यात्मिक प्रगति करना संभव नहीं है। एक ही निंदारूपी आँधी, साधक के जीवन में सालों तक की गई साधना से जो पौधे उगे हों, उन्हें एक ही बार में पूरा तहस-नहस कर देती है। जिस तरह दीमक लकड़ी का अस्तित्व खत्म कर देती है, उसी तरह जब तक किसी व्यक्ति के प्रति नेगेटिव स्पंदन होंगे, निंदा, बुराई या टीका की जाएगी तब-तक सालों बीत जाने पर भी मोक्षमार्ग में एक इंच भी आगे नहीं बढ़ पाएँगे।

निंदा के जोखिम के बारे में दादाजी कहते हैं कि 'एक घंटे की गई निंदा से मनुष्य आठ पशुओं की योनि का आयुष्य बाँध लेता है।' निंदा करने से ज्ञान पर आवरण आ जाते हैं। जो आत्मज्ञान और केवलज्ञान में भी बाधक है। नेगेटिव वाणी, औरों को दु:ख देनेवाली वाणी, निंदा करनेवाली वाणी, कषाय उत्पन्न करनेवाली वाणी नहीं बोलनी चाहिए। विचक्षण मनुष्य उसे कहा जाता है कि जिसे जागृति रहे कि निंदा करने के क्या परिणाम आएँगे। हम महात्माओं को जागृतिपूर्वक पुरुषार्थ शुरू करना है कि अब निंदा में नहीं पड़ना है और यदि हो जाए तो प्रतिक्रमण से साफ करके नौ कलमें और प्रार्थनारूपी बीज बो देने हैं।

अपना ध्येय ऐसा होना चाहिए कि, निंदा कषाय को साफ करके उसे ज्ञान की समझ से निर्मूल कर सकें। इस ध्येय की प्राप्ति में यह वाणी हमारे लिए अवश्य ही सहायक होगी, यही अभ्यर्थना है।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी चंदूभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

निंदा व टीका के जोखिम

साफ दिल नहीं करता किसी की निंदा

प्रश्नकर्ता : हम रोज़ सुबह भगवान की भक्ति करते हैं फिर भी हमें किसी की निंदा के विचार क्यों आते हैं?

दादाश्री : तो और क्या आएँगे? जो माल भरा है, वही निकलेगा! मुझे निंदा करने के विचार नहीं आते, क्योंकि मैंने ऐसा (ये) माल नहीं भरा है। जबकि आपने तो यह (ऐसा) भी भरा है और वह भी भरा है।

प्रश्नकर्ता : यदि हम सच्चे दिल से, सच्चे अत:करण से भगवान की भक्ति करने बैठे हों तो भी ऐसे विचार आते हैं।

दादाश्री : सच्चे दिल से और सच्चे अंत:करण से भक्ति करनेवाले के लिए तो भगवान यहाँ करीब ही है। लेकिन सच्चे दिल से कभी भी किया ही नहीं है। सिर्फ मन में मानते हैं कि सच्चे दिल से कर रहा हूँ।

प्रश्नकर्ता : भगवान तो सिर्फ इतना ही देखते हैं कि इसका दिल साफ है या नहीं?

दादाश्री : नहीं। दिल साफ-वाफ नहीं और भगवान कोई यों दिल देखने जाते भी नहीं। वे कैमेरा नहीं देखते, फोटु कैसा आया है सिर्फ इतना ही देखते हैं। इसने पछतावा (पश्चाताप) किया या नहीं भगवान इतना ही देख लेते हैं।

दिल तो कब साफ होता है? कि सभी तरह के पश्चाताप होते रहते हों। यह तो कुछ बातों में होता है और कुछ बातों में फिर उसे आनंद भी आता है। किसी की निंदा करने में आनंद आता है। इसलिए भगवान यदि दिल को देखेंगे तो दिल तो गंदा ही दिखता रहेगा।

'खुद क्या कर रहा है?' इसका भान नहीं है बेचारे को, इसलिए ऐसा करता रहता है। दु:खी इंसान ही किसी की (निंदा) टीका करता है। दु:खवाला किसी को तंग करता है। सुखी इंसान किसी की (निंदा) टीका नहीं करता। ये दु:खी लोग हैं तो भले करें और यदि इससे आनंद मिलता हो तो करें।

निंदा और टीका में फर्क

प्रश्नकर्ता : आप्तसूत्र में लिखा है कि, 'हमारी टीका करने का लोगों को अधिकार है। हमें किसी की टीका करने का अधिकार नहीं है।' तो निंदा और टीका में क्या फर्क है?

दादाश्री : टीका अर्थात् क्या कि उसके प्रत्यक्ष दिखनेवाले दोषों को ओपन (खुला) करना, उसे टीका कहते हैं। और निंदा यानी दिखनेवाले और नहीं दिखनेवाले सभी का राग अलापते रहता है। उसके बारे में उल्टा (गलत) ही बोलते रहना, उसे निंदा कहते हैं।

प्रश्नकर्ता : निंदा कब कहा जाता है?

दादाश्री : निंदा तो, हमें खुद को भी पता

होता है कि इसकी निंदा कर रहे हैं, ऐसा। हमें खुद को पता भी चलता है। उसका कुछ नुकसान हो जाए ऐसा वाक्य उसके बारे में बोलना, या फिर उसे बुरा लग जाए ऐसा वाक्य बोलना, यह सब निंदा ही कहलाता है न। किसी को खुश करना आता है आपको या नहीं आता? और जिस वाक्य से वह नाखुश हो जाए वे सब निंदा ही हैं। खुश करना आता है या नहीं आता? खुशामद करके खुश करते हैं या नहीं करते? जब कि निंदा कोई खुशामद करके नहीं की जाती।

जहाँ राग-द्वेष, वहाँ निंदा

प्रश्नकर्ता : लेकिन सत्य जानने के लिए टीका-टीप्पणी तो करनी चाहिए न?

दादाश्री : हाँ। सबकुछ करना चाहिए। सभी प्रकार की टीका-टीप्पणी करें तो हर्ज नहीं है। सत्य तो पूरा जानना चाहिए न! सत्य यानी मंथन से होता है। मंथन के सिवा सत्य प्राप्त नहीं हो सकता।

लिखावट (लेख) की टीका करो लेकिन द्वेष नहीं होना चाहिए। समझ में आया या नहीं? टीका करो लेकिन द्वेष नहीं होना चाहिए। जब द्वेष हो जाता है तब निंदा कहलाती है। जब राग-द्वेष होते हैं तब निंदा हो जाती है।

अभिप्राय से राग-द्वेष इसलिए (उससे) निंदा

प्रश्नकर्ता : ये राग-द्वेष कौन करवाता है?

दादाश्री : हमारे अभिप्राय हमें राग-द्वेष करवाते हैं। अभिप्राय बंधे कि राग-द्वेष होते हैं। जिसके प्रति अभिप्राय नहीं, उसके प्रति राग-द्वेष भी नहीं। किसी भी प्रकार का अभिप्राय देना, वह जोखिम है।

जिस वस्तु पर ज़बरदस्त अभिप्राय बैठ जाए तो उसे वहाँ *अटकण* (जो बंधनरूप हो जाए, आगे नहीं बढ़ने दे) हो ही जाती है। अभिप्राय सब तरफ बंटे हुए हों तो निकालना आसान होता है, लेकिन अटकण जैसा हो तो निकालना मुश्किल है। वह बहुत भारी रोग है।

लोकसंज्ञा इसमें बहुत काम करती है, लोगों का माना हुआ खुद 'बिलीफ' में रखता है कि यह अच्छा है और यह खराब। फिर बुद्धि निश्चित करती है और काम करती है।

निंदा ही कषाय

प्रश्नकर्ता : निंदा करते समय आवेश में होते हैं, गुस्से में होते हैं। फिर उस समय जागृति नहीं रहती।

दादाश्री : हाँ। इसे ही कषाय कहते हैं। कषाय यानी औरों के कब्जे में हो गया। उस समय वह बोलता है, लेकिन फिर भी खुद जानता है कि यह गलत हो रहा है। ऐसा पता होता है और कई लोगों को पता नहीं भी होता, बिल्कुल भी पता नहीं होता। यों ही (बोलते रहते हैं)। थोड़ी देर के बाद पता चलता है। हाँ, यानी उस समय वह जानता तो था लेकिन देख नहीं रहा था।

पूरा जगत् कषाय के अधीन है, खुद अपने अधीन नहीं है। अगर अपने अधीन रहता तो ऐसा नहीं करता। कषाय क्यों खड़े हुए? अज्ञानता के कारण! अज्ञानता क्यों खड़ी हुई? संयोगों के दबाव से!

जिस कषाय को निर्मूल करने के लिए यह व्यवहार करना है, उसी व्यवहार से कषाय खड़े हो जाते हैं!

व्यक्तिगत बात करनी, वह निंदा

किसी भी इंसान की व्यक्तिगत बात करने का कोई मतलब ही नहीं है। सामान्य भाव से बात समझने की ज़रूरत है। व्यक्तिगत बात करना, वह तो निंदा कहलाती है। और निंदा तो अधोगति में जाने की निशानी है! ऐसा धंधा कौन करेगा? और इंसान

की निंदा करना ही उसे मारने के समान है इसलिए निंदा में तो बिल्कुल भी नहीं पड़ना चाहिए। यह पाप ही है।

जगत् सामान्य भाव से है। कोई मालिक नहीं है इसका, किसी की मालिकी नहीं इस पर। जिसे जो अनुकूल आए, वैसा ही वह करेगा। उसकी आप निंदा नहीं कर सकते, 'वह गलत है' ऐसा नहीं कह सकते, 'यह गलत है' ऐसा सोच भी नहीं सकते। ये सारा कुदरती संचालन है!

निंदा के पीछे अंदर प्रतिकार (ज़ंग) है हिंसकभाव का

प्रश्नकर्ता : दादा, यह जानने के बावजूद अभी भी बोल दिया जाता है।

दादाश्री : नहीं, अंदर प्रतिकार (ज़ंग) होता ही है। निंदा का प्रतिकार होता ही है, वह हिंसकभाव है।

प्रश्नकर्ता : समझ में आता है कि ऐसा नहीं करना चाहिए, फिर भी हो जाता है।

दादाश्री : फिर भी हो जाता है, क्योंकि इसके पीछे हिंसकभाव है इसलिए गुदगुदी करना चाहें तो भी नहीं हो पाती। जहाँ हिंसकभाव होता है वहाँ गुदगुदी कर ही नहीं सकते।

प्रश्नकर्ता : जहाँ हिंसकभाव होता है, वहाँ गुदगुदी नहीं होती?

दादाश्री : हाँ। किसी को खुश करना आता है या नहीं आता? भले ही ऊपर-ऊपर से या अंदर हार्टिली, दोनों तरह से खुश कर सकते हैं। ऊपर-ऊपर से हो तो भी खुश हो जाते हैं न। हार्टिली हो तो भी खुश हो जाते हैं। ये दो तरीके हैं, लेकिन खुश करने के तरीके और बुरा लगने के तरीके भी तो होते ही हैं न?

प्रश्नकर्ता : हाँ दादा। लेकिन अगर मुझे सत्य नहीं लगता हो तो कैसे उनके पाँव लगूँ। मुझे कुछ सच्चा लगता ही नहीं हो, (तो खुश कैसे करूँ?)

दादाश्री : ऐसा है न कि इस जगत् में जितनी भी शक्तियाँ हैं न, उनकी टीका नहीं करनी चाहिए। मेरे कहने का मतलब है कि किसी भी मामले में सच या झूठ ऐसी टीका नहीं करनी चाहिए। उन्हें जैसा है वैसा कहने देना चाहिए हमें। अगर उनका अनुकूल नहीं लगे तो हमें वहाँ नहीं जाना चाहिए।

फर्क 'टीका' और 'चेतावनी' में

प्रश्नकर्ता : टीका करे लेकिन अगर वह चेतावनी के रूप में हो तो उसमें कोई हर्ज है क्या?

दादाश्री : ना। नहीं उसे टीका की कहलाएगी।

प्रश्नकर्ता : अगर कोई इंसान गलत राह पर, गलत पंथ में चला गया हो, तो कई मित्रों से ऐसा कहूँ कि वह वाममार्ग है, वहाँ मत जाना। तो वह टीका कहलाएगी या चेतावनी कहलाएगी?

दादाश्री : नहीं, यह तो आप उन्हें चेतावनी दे रहे हो। अगर कोई चेतावनी दे रहा है तो वह प्रकाश स्तंभ के समान है। आप उसे चेतावनी के रूप में देते हो, उसके हित के लिए देते हो, लेकिन वह उसे अहित लगता है, टीका जैसा लगता है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या करना चाहिए?

दादाश्री : ऐसा है न कि जो शब्द उगे नहीं वे फिर से नहीं कहने चाहिए, वहाँ पानी नहीं छिड़कना चाहिए। व्यर्थ में पानी छिड़कते रहने से अपना पानी बेकार जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर उगने की संभावना हो तो?

दादाश्री : उगने की संभावना हो तो पानी छिड़कना, उसे उगाने के लिए हमें प्रयत्न करने

चाहिए। एक बार में वह न माने, दूसरी बार में न माने, यदि तीसरी बार में भी न माने तो फिर उनके अंदर जो भगवान हैं न, आपको उन से माँगना चाहिए कि मुझे ऐसा कुछ बताइए कि मैं इसे मोड़ सकूँ, तो वे बताएँगे। उनके अंदर शुद्धात्मा हैं न, वे आपको बताएँगे।

टीका के पीछे है, जानपना का अहंकार

प्रश्नकर्ता : कोई नया सत्संगी, नया महात्मा आए और आप उसके साथ बातें कर रहे हों, सब बैठे हों, तब यदि वह कोई जवाब दे न, तब हँसना आता है।

दादाश्री : उस समय हँसना आए, वह स्वाभाविक है। लेकिन बाद में उस पर टीका टिप्पणी नहीं करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उसमें टीका नहीं होती, लेकिन हँसना आता है।

दादाश्री : हँसना तो एक प्रकार का हास्य नाम का रोग है। लेकिन फिर टीका नहीं करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादा हास्य के पीछे खुद का आशय ऐसा होता है कि वह बेवकूफ है। कुछ नहीं जानता और हम बहुत कुछ जान चुके हैं।

दादाश्री : नहीं, ऐसे हँसना नहीं चाहिए। जो टीका करता है, वह तो ऐसा कहता है कि 'मैं हाज़िर हूँ।' वह अपने स्वभाव का प्रदर्शन करता है।

स्पर्धा से शुरू हुई निंदाएँ

मनुष्य के लिए प्रगति करने का रास्ता है स्पर्धा। स्पर्धा से प्रगति तो हुई और उसी स्पर्धा से निंदाएँ भी शुरू हो गई। स्पर्धा का दुरुपयोग निंदा है और स्पर्धा का सदुपयोग प्रगति। सदुपयोग करने से प्रगति की और अब दुरुपयोग किया तो निंदा।

जहाँ स्पर्धा है, वहाँ निंदा है। स्पर्धा की वजह से ही निंदा होती है। हम जब छोटे थे न, तब लोग इसकी-उसकी निरी निंदा ही करते रहते थे। यानी खुद समझदार और दूसरे सभी पागल!

टीका तो अहंकार का मूल गुण

अब, टीका क्या है? हमेशा होड़ में, रेसकोर्स में रहते हैं। खास तौर पर टीका का इस्तेमाल कहाँ होता है? होड़ में, रेसकोर्स में। मैं बड़ा और वह छोटा।

यह टीका तो अहंकार का मूल गुण है। स्पर्धा का गुण है। इसलिए यह तो रहेगा ही। और स्पर्धा के बिना संसार में नहीं रह सकते। स्पर्धा जाए तो छुटकारा हो गया। उपवास करना वगैरह भी स्पर्धा के गुण के कारण ही खड़ा होता है। उसने पंद्रह किए तो मैं तीस करूँगा। फिर भी टीका करने जैसा नहीं है। पहला, टीका करने से खुद के ही कपड़े बिगड़ते हैं। दूसरा, टीका करने से देह बिगड़ती है और तीसरा, टीका से हृदय बिगड़ता है।

टीका नहीं करनी चाहिए। टीका करनेवाले खुद के ही कपड़े बिगाड़ते हैं। अत: यह बिगाड़ने का साधन है। इसमें नहीं पड़ना चाहिए। जानने की खातिर जान लेना है, लेकिन पड़ने जैसा नहीं है। यह जन्म टीका करने के लिए नहीं मिला है हमें। हं, अगर कोई टीका करे तो *नोंध* (नोट करना) नहीं रखनी है। कोई टीका करे और आप अगर सहन कर लोगे तो ज्ञान बढ़ेगा।

बस इतना ही जान लो। गहराई में मत जाओ। क्योंकि वह मालिक है न खुद का! खुद अपना मालिक है न? उसकी मालिकी व टाइटल उसके हैं, हम क्यों (टीका करें), वर्ना हम तो ट्रैस-पासर (गुनहगार) कहलाएँगे।

जो टीका करता है, वह जंगली कहलाता है। टीका क्यों करता है? खुद को अंदर दु:ख है इसलिए अपनी शांति के लिए टीका करता है।

किसी की निंदा अर्थात् 'भगवान' की निंदा करने के बराबर

किसी की निंदा करना बाकी ही रखता नहीं। निंदा तो किसी की भी नहीं करनी चाहिए। इंसानों की निंदा नहीं करनी चाहिए। हालाँकि जानवरों की तो निंदा नहीं करते बहुत, लेकिन इंसानों की ही करते हैं। इंसानों की निंदा करना भगवान की निंदा करने के बराबर है। लेकिन करें क्या? फुरसत मिलते ही स्पर्धा के गुण। ये सब दु:ख क्यों है? नासमझी से भयंकर पाप किए हैं।

यदि टीका है, तो वीतरागों का विज्ञान नहीं है, वहाँ धर्म है ही नहीं। टीका हर तरह से बाधक है। टीका करने के लिए फुरसत ही नहीं होनी चाहिए। उसकी हेल्प (मदद) न करो तो (हर्ज नहीं) लेकिन टीका तो मत ही करो।

झूठ बोलकर भी निंदा के रोग से बचना चाहिए

(फुरसत मिले तो) पुस्तक लेकर बैठना लेकिन। किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए।

जहाँ निंदा हो रही हो, बदगोई हो रही हो, वहाँ खड़े मत रहना। लोग ऐसा कर रहे हों तो हमें वहाँ से उठ जाना चाहिए। वे कहें, 'क्यों उठ गए?' 'अरे भाई, मुझे सरदर्द है,' यों झूठ बोलने में भी हर्ज नहीं है। अगर उनसे कहें कि 'आप निंदा कर रहे हो' तो फिर उल्टा इफेक्ट होगा। अत: उन्हें परेशानी न हो और हमें अपना काम निकाल लेना है। किसी की निंदा में पड़ना ही नहीं है। किसी के बारे में बात ही नहीं करनी है। किसी की गलतियाँ नहीं देखनी हैं। अपनी ही गलतियाँ देखने जैसा है उसके बजाय लोगों को पराई (गलतियाँ) देखने की आदत पड़ गई है।

खुद की (ही) गलतियाँ देखनी हैं। इसके बजाय यह तो कहेगा) इसे ऐसा हुआ, उसे वैसा हुआ। हमें क्या लाभ होगा, इतना देखना है।

(ये तो) सभी चबूतरे पर बैठें हों तो यही बातें चलती हैं, 'इसने ऐसा (किया) और उसने (वैसा) किया। क्योंकि आँखों देखा और कानों सुना मानते हैं। और हमें उसमें दिलचस्पी नहीं होती। वे कहेंगे, सभी को दिलचस्पी है, इन्हें क्यों नहीं है? यानी इन्हें कोई नई प्रकार की बीमारी है। अब इन बातों में दिलचस्पी नहीं रही।'

'लोगों को कैसा लगेगा।' ऐसे भय को स्थान नहीं देना है। इसके बजाय अपना कमरा चोखा रखना अच्छा है। जगत् की टीका के हिस्से में जो आता है ऐसा विचार आते ही उसे धो कर साफ कर लो।

निंदा-टीका से देश खत्म हो गया

हिंदुस्तान के लोगों को तो घपले (घोटाले) करते रहने हैं और शांति चाहिए। पूरे दिन पड़ोसी की निंदा करते हैं, ऑफिसर की निंदा करते हैं। पूरे दिन निंदा, बदगोई और ऐसा ही सब, उल्टा (गलत) ही करते हैं।

पूरा देश निंदा से खत्म हो गया था और भयंकर निंदा। हमारे शास्त्रकारों ने नियम बनाया था कि टीका अवश्य करना। अगर टीका नहीं करेंगे तो लोग (गलती करने से) पीछे नहीं हटेंगे। उस टीका की अतिशयोक्ति होने से निंदा हो गई।

यह जगत् कैसा है? कि सही बात सुननेवाला कोई नहीं मिलता। और झूठी बात सुननेवाले जगह-जगह मिल जाते हैं। इस जगत् में सबसे अधिक और उसमें भी खास तौर पर हिंदुस्तान देश निंदाओं की वजह से ही डूब गया है।

इस देश में लोग पूरा दिन टीका में, निंदा में ही व्यतीत करते हैं, और फिर देखो, सुख भोग रहे हैं! कैसा सुख भोग रहे हैं कि उन्हें दूध भी पानीवाला

मिल रहा है! फॉरेनवाले तो, पानीवाला दूध होता है, ऐसा जानते भी नहीं हैं। और अपने यहाँ तो सेठ मिलाता है वह तो अलग, फिर दूधवाले भैया ने रास्ते में थोड़ा बेच दिया होता है इसलिए फिर नल का पानी मिलाता है, वह अलग। लेकिन यह भी ठीक है कि नल का पानी मिलाता है, कौन सा पानी मिला दे कैसे कह सकते हैं? वास्तव में देखा जाए तो दूध पीना ही नहीं चाहिए, लेकिन क्या हो सकता है? आकर फँस गए तो फँस गए।

(ये सब) क्यों दु:खी थे वह भी ढूँढ निकाला। और आजकल गाँववाले क्यों दु:खी हैं? ये ही धंधे।

और ये फॉरेन के लोग, अगर कुछ न हो तो सभी रेडियो-वेडियो की मस्ती में ही। किसी की निंदा-विंदा में नहीं। कुछ न हो तो टी.वी देखते हैं, फलाँ देखते हैं। वह भी खुद की आँखे बिगाड़कर। क्या लोगों की आँखे बिगाड़ते हैं? उनकी अपनी ही ज़िम्मेदारी है न!

हमारा ही प्रतीक है, वहाँ 'टीका' कैसी?

समाज तो कर्म के उदय के अधीन मिलता है। नियम-वियम कर्म के उदय के अधीन हैं। ये प्रधानमंत्री क्यों बन गए? तो हमारे कर्म के अधीन। वे तो हमारे प्रतीक हैं, उन्हें गालियाँ देना गुनाह है। प्रधानमंत्री को गालियाँ दें कि 'ये तो नालायक हैं,' वे तो हमारे ही प्रतीक हैं। जब-तक हम नालायक रहेंगे तब-तक ऐसे प्रधानमंत्री ही आएँगे। जब हम लायक बन जाएँगे तब अच्छे आएँगे। इसलिए किसी की टीका में पड़ने जैसा नहीं है। एक महाराज धर्म के सत्संग के बारे में बात कर रहे थे। वहाँ हज़ारों लोग बैठे थे, तब एक व्यक्ति ने मुझ से कहा 'देखो न! ये ऐसा उपदेश दे रहे हैं।' मैंने कहा, 'उपदेशक गलत नहीं होते। जब लकड़ा टेढ़ा हो न, तब आरी भी टेढ़ी रखनी पड़ती है। सीधी रखेंगे तो आरी टूट जाएगी। यानी टेढ़े लकड़े पर टेढ़ी आरी चलानी पड़ती है।

यानी ये, ऐसा उपदेश दे रहे हैं क्योंकि लकड़ा टेढ़ा है इसीलिए। आप टेढ़े हो इसलिए टेढ़ा काटना पड़ता है। जब आप सीधे हो जाएँगे तब आरी भी सीधी चलेगी। आपकी समझ में आता है? टेढ़ा लकड़ा तो टेढ़ा काट।

निंदा मतलब टाइम और एनर्जी वेस्ट करना

अपने देश में लोग दिन भर निंदा ही करते रहते हैं, जो कि सबसे भयंकर पाप है। भगवान की भी निंदा करते हैं न! कमाने पर कहता है 'मैंने कमाया' और जब नुकसान होता है तब 'भगवान ने करवाया।' 'भगवान ने करवाया' ऐसा कहते हैं? कहते हैं न लोग?

खुले आम बोलना ही अपने लोगों का धंधा है। फिर मार भी वैसी ही खाते हैं न। दूसरे जन्म में चार पैरोंवाले बनकर आराम से लोगों के खेत जोतकर देते हैं, सब करके देते हैं। इसमें न्याय किसी को छोड़ेगा नहीं न? न्याय छोड़ेगा किसी को? अत: मेरी बातें इस सही बात को समझाने के लिए हैं लेकिन फिर भी लोगों की समझ में आए तो समझेंगे न? वह भी अगर पुण्य हो तभी समझ पाएँगे।

किसी की भी टीका करने का मतलब है, अपना दस रुपये का नोट भुनाकर एक रुपया लाना। टीका करनेवाला हमेशा खुद का ही खोता है। जिससे कुछ भी नहीं मिलता, ऐसी मेहनत हमें नहीं करनी है। टीका से आपकी ही शक्तियाँ व्यर्थ जाती हैं। हमें दिख गया कि यह तिल नहीं, रेती ही है, तो फिर उसे पीलने की मेहनत किसलिए करनी चाहिए? 'टाइम और एनर्जी' (समय और शक्ति) दोनों 'वेस्ट' (बेकार) जाते हैं।

ये दो न करे, तो सब 'धर्म' ही है

इस देश के लोगों का धर्म, *अणहक्क* (बिना हक का) का कुछ भी न भोगें और निंदा न करें न,

तो निरा धर्म ही है। मंदिर जाने की भी ज़रूरत नहीं है। जबकि ये तो बुद्धिवाले, अपने साथ स्पर्धा करनेवाले को छोड़ेंगे क्या? छोड़ देंगे? नहीं छोड़ेंगे न?

यदि मेमार हो, तो मेमार लोगों के बीच स्पर्धा होती है, बढ़ई हो तो बढ़ई लोगों के बीच स्पर्धा होती है। इसीलिए तो यह दुनिया चल रही है, वर्ना चलने ही नहीं देते। लेकिन लोगों ने स्पर्धा का दुरुपयोग किया है। गलत बोलने लगे। क्या कहते हैं कि 'वह ऐसा है, वह वैसा है।' ये सब तो जब फुरसत में थे न, तब बहुत निंदा करते रहते थे। इतनी ज़्यादा फुरसत मिलती थी। अब लोगों के पास ज़्यादा फुरसत नहीं है। पहले तो मंडली जमती थी। उससे पूरे दिन कलह चलती ही रहती थी।

अरे! तरह-तरह का बोलते थे लोग! कुछ तृतियम ही ले आते। ऐसा यह अलग ही प्रकार का देश है। यहाँ से पार उतरना तो बहुत मुश्किल चीज़ है।

अगर निंदा छोड़ दें तो बहुत सुखी हो जाएँगे लेकिन निंदा छोड़ते नहीं हैं न ये लोग। लेकिन निंदा पहले से कम हो गई है। आजकल तो खुद के कामों में लग गए हैं न, पहले बेकार बैठे रहते थे, इसलिए निंदा ही करते रहते थे।

अभी क्या हुआ है कि इन लोगों का निंदा करनेवाला हिस्सा टूट गया। काल पूरा बदल गया न, अँग्रेज़ी पढ़-लिखकर अब काम-धंधे पर लग गए। बेकार बैठेंगे तो निंदा करेंगे न?

टीका करने में शर्म नहीं आती?

(एक बार एक भाई) चार बेटियों के बाप थे, वे कहने लगे कि 'मेरी बेटियाँ तो बहुत समझदार हैं।' तब मैंने कहा, 'हाँ, अच्छा है।' फिर जब दूसरी लड़कियों की टीका करने लगे न, तब मैंने कहा, 'टीका क्यों कर रहे हो लोगों की? यदि आप लोगों की टीका करोगे तो लोग आपकी भी टीका करेंगे।' तो कहने लगे, 'लेकिन मुझ में टीका करने जैसा है ही क्या?' तब मैंने कहा, 'दिखाता हूँ लेकिन चुप रहना,' फिर उनकी लड़कियों की नोटबुक (किताबें) लाकर सब दिखाया। 'हें! हाय, हाय।' मैंने कहा, 'चुप रहो, चुप हो जाओ,' मेरे पास किसी की भी टीका मत करना। मैं जानता हूँ? कि आप इतना रौब मारते हो फिर भी मैं चुप क्यों हूँ? मैं जानता हूँ कि भले ही रौब दिखाकर, फिर भी संतोष रहता है न इनको? लेकिन जब टीका करने लगे तब कहा, 'मत करना टीका' क्योंकि बेटियों के बाप होकर अगर हम किसी और की बेटियों की टीका करें, तो वह (गलत) है। जो बेटियों का बाप नहीं होता, वह बेचारा तो ऐसी टीका करता ही नहीं। जो बेटियों का बाप न हो, जिसे बेटियाँ न हो वह टीका करने में पड़ता ही नहीं। ये बेटियोंवाले ज़्यादा टीका करते हैं। अरे! तू बेटियों का बाप होकर टीका कर रहा है? तुझे शर्म नहीं आती?

अगर निंदा में पड़ेंगे तो लक्ष्मी जी रूठ जाएँगी

इन लोगों के पास कोई काम-धंधा नहीं था न, इसलिए सारे दिन निंदा ही करते रहते थे, तो फिर धंधा कैसे हो सकता था? ऐसा करने से लक्ष्मी कभी भी नहीं आती। यह वाणी तो सरस्वती देवी है। निंदा नहीं करनी चाहिए। अगर दुरुपयोग करोगे न तो लक्ष्मी रूठ जाएगी। जहाँ तिरस्कार और निंदा होगी वहाँ लक्ष्मी जी नहीं रहेंगी। लक्ष्मी कब नहीं मिलती? लोगों की बदगोई या निंदा में पड़ें तब लक्ष्मी आना बंद हो जाती है। मन की स्वच्छता, देह की स्वच्छता और वाणी की स्वच्छता हो तो लक्ष्मी मिलती है!

निंदा की मिठास देती है निमंत्रण नर्कगति को

किसी की निंदा करने से उसका उतना टाइम (समय) व्यर्थ लेकिन अच्छा बीतता है। लेकिन निंदा

के फल स्वरूप क्या इनाम मिलता है इसका उसे पता नहीं चलता!

प्रश्नकर्ता : जितनी देर निंदा करता है उसका उतना समय उसमें अच्छा व्यतीत होता है।

दादाश्री : मीठा व्यतीत होता है न?

प्रश्नकर्ता : मीठा बीतता है। हाँ।

दादाश्री : किसी का दोष देखने से आपको मिठास बरतती है और मिठास बरते तो आपको नर्कगति में जाना पड़ता है। जहाँ मिठास नहीं थी वहाँ आपने मिठास उत्पन्न की।

मृत व्यक्ति की निंदा करके बाँधते हैं भयंकर गुनाह

कोई इंसान की मृत्यु होने के बाद अब आप उसके नाम पर गालियाँ दो, तो आप भयंकर दोष में पड़ेंगे। इसमें हम ऐसा कहना चाहते हैं कि मृत व्यक्ति के बारे में भी कुछ नहीं कहना चाहिए। उस तक पहुँचा, नहीं पहुँचा इसका सवाल नहीं है। लेकिन मृत व्यक्ति के बारे में कुछ नहीं कहना चाहिए। कोई खराब इंसान काफी कुछ गलत करके मर जाए फिर भी उसके बारे में खराब नहीं कहना चाहिए।

अपने कोई रिश्तेदार कि मृत्यु हो जाए, और अगर लोग उनकी निंदा कर रहे हों तो हमें उसमें शामिल नहीं होना चाहिए और यदि शामिल हो जाए तो बाद में हमें पश्चाताप करना चाहिए कि ऐसा नहीं होना चाहिए। किसी व्यक्ति की बातें करना भयंकर गुनाह है। लोग तो मृत व्यक्ति को भी नहीं छोड़ते। लोग ऐसा करते हैं या नहीं करते? तो ऐसा नहीं होना चाहिए, हम यह कहना चाहते हैं। बहुत बड़ा जोखिम है।

निंदा अर्थात् विराधना

प्रश्नकर्ता : किसी की निंदा करें, तो उसका समावेश किसमें होता है?

दादाश्री : निंदा, विराधना में आती है। लेकिन प्रतिक्रमण करने से धुल जाती है। इसीलिए तो हम कहते हैं कि किसी की निंदा मत करना। फिर भी लोग पीठ पीछे निंदा करते हैं। अरे, निंदा नहीं करनी चाहिए। इस वातावरण में सारे परमाणु ही भरे पड़े हैं, सब पहुँच जाता है। गैरज़िम्मेदारीवाला एक भी शब्द किसी के लिए नहीं कहना चाहिए। और यदि कहना ही है तो कुछ अच्छा कहो। कीर्तिवाला कहो, अपकीर्तिवाला मत कहना।

अर्थात् किसी की निंदा में नहीं पड़ना चाहिए। कमाई न हो सके, कीर्तन न हो सके तो हर्ज नहीं है, लेकिन निंदा में मत पड़ना। मैं कहता हूँ कि निंदा करने से हमें क्या फायदा? उसमें तो बहुत नुकसान है। इस जगत् में अगर कोई ज़बरदस्त नुकसान है तो वह निंदा करने में हैं। इसीलिए किसी की भी निंदा करने की ज़रूरत ही नहीं है।

निंदा दोष से बंधता है ज्ञानावरण

हम समझने के लिए बातें कर रहे हैं कि क्या सही है और क्या गलत! भगवान ने क्या कहा है? कि गलत को गलत जान और अच्छे को अच्छा जान। लेकिन गलत जानते वक्त उस पर किंचित्मात्र भी द्वेष नहीं रहना चाहिए और अच्छा जानते वक्त उस पर किंचित्मात्र भी राग नहीं रहना चाहिए। अगर गलत को गलत नहीं जानेंगे तो अच्छे को अच्छा नहीं जान पाएँगे। इसलिए हम विस्तारपूर्वक बातें कर रहे हैं।

किसी भी इंसान की निंदा नहीं करनी चाहिए। अरे! उसके बारे में बिल्कुल भी बातचीत नहीं करनी चाहिए। उससे भयंकर दोष लग जाता है। उसमें भी यहाँ सत्संग में, परमहंस की सभा में तो किसी की बिल्कुल भी गलत बात नहीं करनी चाहिए। एक ज़रा सी उल्टी कल्पना से ज्ञान पर कितना बड़ा आवरण आ जाता है! वह अवर्णवाद जैसा है।

गाढ़ निंदा करना वह - 'अवर्णवाद'

प्रश्नकर्ता : इसमें जो अवर्णवाद शब्द है न, इसका 'एक्ज़ेक्ट मीनिंग' (वास्तविक अर्थ) क्या है?

दादाश्री : किसी भी तरह से जैसा है वैसा चित्रण न करके उल्टा चित्रण करना, वह अवर्णवाद! जैसा है वैसा तो नहीं बल्कि उससे उल्टा। जैसा है वैसा चित्रण करें और गलत को गलत कहे और अच्छे को अच्छा कहे, तो अवर्णवाद नहीं कहलाएगा। लेकिन जब पूरा गलत ही बोलें तब अवर्णवाद कहलाता है।

इसलिए उसे एक खास प्रकार की निंदा कहते हैं, निंदा ही लेकिन सामान्य नहीं बल्कि कुछ खास प्रकार की जैसे ये नीची जाति होती है न, वे कोई खास निंदा करने योग्य नहीं है, लेकिन उनकी भी बेहद निंदा करते हैं। नीची जाति का है तो उसमें उसका क्या दोष? लेकिन अवर्णवाद बोलते हैं और अच्छे लोगों के लिए भी अवर्णवाद। बुरे इंसान के बारे में तो कहते हैं लेकिन साथ-साथ अच्छे इंसान के बारे में भी कह देते हैं। यानी वह एक तरह की, अमुक प्रकार की निंदा है।

अवर्णवाद अर्थात् बाहर किसी व्यक्ति की इज्जत हो, रुतबा हो, कीर्ति हो, तो गलत बोलकर उसे तोड़ देना, उसे अवर्णवाद कहते हैं। यह अवर्णवाद तो निंदा से भी ज़्यादा खराब चीज़ है। अवर्णवाद अर्थात् उसके लिए गाढ़ निंदा करना। यों लोग कैसी निंदा करते हैं? साधारण निंदा करते हैं। लेकिन गाढ़ निंदा करना अवर्णवाद कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : गाढ़ निंदा यानी कैसी निंदा?

दादाश्री : उसका रूपक ही बुरा दिखाते हैं। यों साधारण निंदा करते हैं कि, 'यह अच्छा इंसान नहीं है।' इसे साधारण निंदा कहते हैं। लेकिन उसके बारे में वह सामनेवाले के दिमाग में घुसा देता है, उसे अवर्णवाद कहते हैं।

किसी इंसान में कुछ तो अच्छा होता है या नहीं होता?

प्रश्नकर्ता : होता है न।

दादाश्री : और थोड़ा बुरा भी होता है। लेकिन जब उसके बारे में सबकुछ बुरा बोलें, तब फिर अवर्णवाद कहलाता है। 'इस मामले में थोड़े से ऐसे हैं लेकिन बाकी बातों में बहुत अच्छे हैं।' ऐसा होना चाहिए।

महापुरुषों के लिए अवर्णवाद विराधना से भी बढ़कर

अवर्णवाद अर्थात् किसी बारे में उनकी बातें जाने, फिर भी उनकी सारी बातों के लिए उनके विरुद्ध बोलना। जो अवगुण उनमें नहीं हैं उन अवगुणों के बारे में हम उनके विरुद्ध बातें करें, तो वह सारा अवर्णवाद। वर्णवाद यानी जैसा है वैसा कहना और अवर्णवाद यानी जो नहीं है, वह कहना। यह तो विराधना कहलाती है, सबसे बड़ी विराधना। और अवर्णवाद भी किसका करते हैं? महान पुरुषों का करते हैं न! औरों के लिए कहा जाए तो निंदा कहलाती है लेकिन महान पुरुषों का अवर्णवाद कहलाता है।

प्रश्नकर्ता : छोटे लोगों के लिए जिसे हम निंदा मानते हैं, वही बात महान पुरुष के लिए हो तो अवर्णवाद कहलाता है?

दादाश्री : महान पुरुष अर्थात् अंतर्मुखी पुरुष। महान पुरुष यानी प्रेसिडेन्ट के लिए नहीं है, अंतर्मुखी पुरुष। उनके लिए अवर्णवाद बोलना तो बड़ा जोखिम है! विराधना से भी बढ़कर है।

अन्य किसी के प्रति किए गए पाप बाँधकर लाओगे, तो मैं धो दूँगा, लेकिन इनके प्रति किए गए पाप नहीं धुलेंगे। ग़ज़ब के तीर्थंकर, जिनका नाम सुनकर ही कल्याण हो जाए ऐसे तीर्थंकर। रावण को

तो लोगों ने बदनाम कर दिया है, हिंदुस्तान के लोगों ने बदनाम किया है, और कोई बदनाम नहीं कर सकता। रावण तो तीर्थंकर बननेवाले हैं। ये हिंदुस्तान के लोग पुतला जलाते हैं, ये सब मूर्खता ही है न! अपना ऐसा दुर्भाग्य है कि ऐसे ये नासमझी की बातें करते हैं! वे तो प्रतिनारायण कहलाते हैं। प्रतिवासुदेव कहलाते हैं। ग़ज़ब के पुरुष हैं। और ये लोग बिना समझे बोलते रहते हैं।

अवर्णवाद की जोखिमदारी नहीं लेते दादा

रावण के लिए गलत नहीं बोलना चाहिए क्योंकि अभी वे देहधारी हैं। 'रावण ऐसा था और वैसा था' बोले तो उन तक 'फोन' पहुँच जाता है। आपकी समझ में आया न? जोखिम नही उठा सकते। कुछ बातों में जोखिम नहीं उठाना चाहिए। अगर आप अन्य जोखिम उठाकर आओगे न तो मैं धो दूँगा लेकिन इनका जोखिम लिया होगा तो मैं नहीं धो सकूँगा। फिर हमारी सत्ता नहीं है। इसीलिए मैं मना करता हूँ कि इस बारे में चर्चा में मत पड़ना। अन्य किसी बात में पड़ना। तिरसठ शलाका पुरुषों के लिए ऐसा नहीं कहना चाहिए वे तिरसठ शलाका पुरुष कहलाते हैं। एक अर्ध कालचक्र में तिरसठ शलाका पुरुष अवतरित होते हैं। फिर दूसरे अर्ध कालचक्र में फिर से तिरसठ होते हैं। किसी को भी उन तिरसठ के लिए कुछ नहीं कहना चाहिए। उनकी गति वे जानें, आपको गहरे नहीं उतरना है। आप बिना समझे गहरे उतरते हो, क्या हो सकता है? महान पुरुष की गति महान ही जानें। आप उनकी टीका में पड़ो, आप नासमझ, इसीलिए हम आपको मना करते हैं कि इसमें गहरे मत उतरना। आपकी समझ में आ गई न मेरी बात? कहीं पर बातें, चर्चा हो रही हो तो भी बहरों की तरह सुनना चाहिए।

चक्रवर्ती संपूर्ण छह-छह खंडों के अधिपति। छह खंडों के अधिपति, चक्रवर्ती। ये तीन खंडों के अधिपति कहलाते हैं। इसीलिए कृष्ण अर्धचक्री कहलाते हैं। रावण अर्धचक्री कहलाते हैं। कृष्ण भगवान के लिए उल्टा नहीं बोलना चाहिए। कृष्ण भगवान तो वासुदेव नारायण कहलाते हैं। तीर्थंकर बनेंगे। उनकी निंदा नहीं करनी चाहिए। आपको उनकी गति-विधियाँ देखने की ज़रूरत नहीं है। ये सभी लोग तो ऐसी निंदा में पड़कर फिर भयंकर पाप बाँधते हैं। किस वजह से पाप बाँध रहे हो? भगवान ने जिन्हें तिरसठ शलाका पुरुष कहा है?

ये सब अभी मोक्ष में नहीं जानेवाले। ये सब तो तीर्थंकर बनेंगे। कृष्ण भगवान, रावण, देवकी, बलराम। ये सब बाद में जाएँगे। पहले तीर्थंकर साहब श्रेणिक राजा हैं। श्रेणिक राजा तीर्थंकर बनेंगे।

मन मैला चित्त चोर,
एकहु पाप न उतरा,
लाया मन दस ओर. - कबीर जी.

एक पाप तो धोया नहीं और वहाँ से लड़ाई-झगड़े करके, टीका करके दस और ले आया। ऐसा सब करने से गति बिगड़ जाती है।

झूठे (गलत) की भी विराधना नहीं करनी चाहिए। आपको आराधना नहीं करनी हो तो मत करो। सामनेवाले का ऐसा 'व्यू-पॉइन्ट' है, गलत नहीं है। आपको नहीं पुसाए तो मत करो। विराधना सही व्यक्ति की भी नहीं करनी चाहिए और गलत की भी नहीं करनी चाहिए। निंदा विराधना मानी जाती है। विराधना मात्र दु:खदाई है।

अवर्णवाद और विराधना में क्या अंतर है?

प्रश्नकर्ता : अवर्णवाद और विराधना में क्या अंतर है?

दादाश्री : विराधना करनेवाला तो वापस नीचे जाता है, निम्न गति में। किसी महाराज के लिए अवर्णवाद बोलने के बाद अगर प्रतिक्रमण कर ले तो हर्ज नहीं है, रेग्युलर (ठीक) हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : विराधना के भी प्रतिक्रमण हो सकते हैं न?

दादाश्री : (नहीं, वह तो) गया...पूना जाता है अहमदाबाद ढूँढने के लिए।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए फिर प्रतिक्रमण का भी चान्स नहीं है।

दादाश्री : कैसे करेगा वह? वह गया...

प्रश्नकर्ता : दादा, रुकावटें जो आती हैं, वे विराधना से आती है?

दादाश्री : निरे अपराध। विराधना से तो वापस उल्टा जाता है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर विराधनावाले को सीधा आने का चान्स ही नहीं है?

दादाश्री : है न। लेकिन गिर जाते हैं सब, बहुत लोग गिर जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : अपराधवाले का भी ऐसा है?

दादाश्री : वह तो वापस भी नहीं आता और आगे भी नहीं बढ़ता। उसका तो कोई मालिक ही नहीं है न।

आराधना-विराधना के गुण-दोष

आराधना और विराधना। आराधना यानी ऊपर चढ़ना। जिस काम को करने से हम ऊपर चढ़ सकें उसे आराधना कहते हैं। अर्थात् जो ऊँचाई पर पहुँचे हुए हैं, उनके साथ जॉइन्ट रहें तो हम भी ऊँचाई पर पहुँच सकते हैं।

जो जीव ऊँचाई पर हैं उनके साथ अगर हम तार जोड़ें तो हम भी ऊँचाई पर पहुँच सकेंगे। और अगर उनका ही गलत बोलें तो विराधना (होती है) और (फिर) नीचे गिर जाएँगे। अगर सीढ़ी को ही तरछोड़ (तिरस्कार) मारेंगे तो फिर हम नीचे गिरेंगे। हम से यदि दो डिग्री भी उच्च हो तो उनके साथ गुण में रहें, उनके गुणगान करें, उनकी भक्ति करें, उनकी सेवा करें तो आराधना कहलाएगी। और अगर उनके ही अवगुण कहे और गलत किया तो उनकी विराधना होगी। विराधना से नीचे गिरेंगे और आराधना से ऊँचे चढ़ जाएँगे। दो रास्ते!

अब आप जब से दादा से मिले हैं, तभी से आपकी आराधना शुरू हो गई है और आराधना कभी बंद हुई ही नहीं है, उसी को आराधना कहते हैं। दिनोंदिन हमें ऐसा लगेगा कि हम कुछ ऊपर चढ़ रहे हैं। हमें समाधान रहेगा, शांति रहेगी!

गुरु की निंदा, बड़ी जोखिमदारी

प्रश्नकर्ता : किसी भी व्यक्ति, साधु-संत की टीका करने से क्या होता है?

दादाश्री : साधु-संत की टीका नहीं करनी चाहिए। ये गलत है। साधु-संत की किंचिंत्मात्र भी टीका करना गुनाह है।

जिन्हें एक बार हमने नमस्कार किया हो, ऐसे कोई भी गुरु हों, भले ही चक्रम हों या पागल हों वे चाहे जो भी करें, लेकिन एक बार नमस्कार करने के बाद हमें उनकी निंदा में नहीं पड़ना चाहिए। कई ऐसी कौम हैं, वे नहीं पड़ते कि 'भाई, हमारे गुरु हैं, वे चाहे सो करें,' कहते हैं। कितनी समझदार कौम है, देखो न! इसे समझदारी कहते हैं। उनका समझदारीवाला एक भी गुण हो तो हमें उसे लेना चाहिए, स्वीकार करना चाहिए न!

वीतराग क्या कहते हैं कि किसी भी व्यक्ति का समझदारीवाला गुण हो तो हमें स्वीकार करना चाहिए। जिन गुरु को रोज़ नमस्कार करते थे उन्ही गुरु की जब पोल खुले, तब हम निंदा करें, ऐसा नहीं करना चाहिए। क्या? निंदा से दूर रहो। गुरु उल्टा कर रहे हैं तो जोखिमदारी गुरु की है। उसमें किसी

की जोखिमदारी नहीं है। लेकिन ये जो निंदा में पड़ जाते हैं न, अपने यहाँ तो डेवेलप्ड कौम है न, तुरंत ही निंदा शुरू (हो जाती है)। गुरु ऐसा कैसे कर सकते हैं? और गुरु को गलत करना ही नहीं चाहिए, ऐसा करना चाहिए? अंदर दखल किए बगैर इस बुद्धि को हटाओ न यहाँ से। ये तो गुरु के भी न्यायाधीश बन जाते हैं।

टीका में शूरवीर आज के बुद्धिमान, ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद

कृष्ण भगवान ने कहा है न, 'ज्ञानी ही मैं हूँ और ज्ञानी (ही) मेरा आत्मा है और मैं ही हूँ।' और जहाँ यह होगा वहाँ वास्तविकता मिलेगी। वहाँ जो माँगोगे वह मिलेगा। अगर मोक्ष चाहिए तो वे मोक्ष देंगे। क्योंकि उनका खुद का हो चुका है। जिनका हो चुका हो वे टीका में क्यों पड़ेंगे?

टीका कब तक करते हैं? जब तक बुद्धि उछलती रहती है, तब तक। और जो बुद्धि रहित हो चुका है वह टीका नहीं करते। हम बुद्धि रहित हो चुके हैं। हममें बुद्धि नहीं होती। कृष्ण भगवान में बुद्धि नहीं थी और महावीर भगवान में भी बुद्धि नहीं थी। (क्योंकि वे ज्ञानी थे और बुद्धि रहित हो चुके थे) कृष्ण भगवान ने कहा है कि, 'ज्ञानी कर्मों की गठरी बनाकर नाश कर देते हैं।' आज भी ज्ञानीपुरुष वही कृष्ण भगवान (समान) है।

लोग हमें जानते हैं, फिर भी हम नहीं कहते। जैन लोग हमें महावीर मानते हैं और वैष्णव हमें कृष्ण मानते हैं। हम नहीं कहते, क्योंकि लोग अगर टीका करेंगे तो महान पाप बाँधेंगे। इसीलिए नहीं कहते। क्योंकि अपने लोग टीका करने में शूरवीर हैं, बहुत शूरवीर। अपने हिंदुस्तान के लोग, और सब नहीं। क्योंकि ये अन्य सभी प्रजा तो वाइज़ है और ये तो ओवर वाइज़ हो गए हैं। *इसका गुजराती शब्द क्या है?*

प्रश्नकर्ता : ज़रूरत से ज़्यादा अक्लमंद।

दादाश्री : ये तो धर्म के स्थान पर और ज़्यादा पाप बाँधते हैं। अगर निंदा करनी हो तो घर पर करना अच्छा लेकिन धर्म के स्थान पर की हुई निंदा वज्रलेप हो जाएगी।

निंदा करने पर भी गिरने न दें ज्ञानी

भगवान मेरे *ऊपरी* (बॉस) नहीं है, भगवान मेरे वश हो गए हैं। भले ही तीन-सौ छप्पन डिग्री पर हूँ, लेकिन भगवान मेरे वश हो चुके हैं यह बात पक्की है। और मैं भगवान बनना भी नहीं चाहता। लोग कहते हैं न, 'दादा, आप भगवान हो?' मैं कहता हूँ, 'मुझे भगवान बनकर क्या करना है? मैं जिस डिग्री पर हूँ, वहाँ भगवान मुझे वश हो चुके हैं और भगवान बनकर क्या करना है?' 'मैं खुद ही कहूँ कि मैं भगवान हूँ' तो पीठ पीछे लोग टीका करके पाप बाँधेंगे।

तब कहते हैं, 'दादा भगवान क्यों कहलवाते हो? पुस्तकें क्यों छपवाते हो?' मैंने कहा 'अगर लोग पुस्तकें छापते हैं तो उसमें आपको क्या हर्ज है?' तब कहते हैं, 'दादा भगवान कहलवाते हो?' 'मैं नहीं कहलवाता,' लोग कहते हैं। 'लेकिन आप क्यों गुस्सा हो रहे हो?' मैंने उनका हाथ पकड़कर कहा, 'शांत हो जाओ न!' लेकिन अकुलाहट बहुत होती है न!'

और अंत में कहता हूँ कि टीका में मत पड़ना। हम आपसे विनती करते हैं कि हमारी टीका में मत पड़ना। हमने कहा, हम सर्वज्ञ हो गए हैं। एक अक्षर भी टीका नहीं करनी चाहिए। क्योंकि टीका करने से नुकसान हो जाएगा।

जिनका विनय करो, उनकी निंदा मत करना और अगर निंदा करनी हो तो उनका विनय मत करना। इसका कोई अर्थ (मतलब) ही नहीं है न!

कैसी करुणा ज्ञानीपुरुष की

दादा भगवान की निंदा करे, सवाल वह नहीं है लेकिन निंदा करने से वह और भी गिर जाएगा। ऐसे निंदा करके उसे गिरना पड़े ऐसा संयोग मैं नहीं आने दूँगा। मेरे निमित्त से उसे गिरने नहीं दूँगा। बाद में बाहर जाकर भले ही तू गिरना। 'तुझे अगर मुझे चार गालियाँ देनी हो तो तू देना,' लेकिन तुझे गिरने नहीं दूँगा।

प्रश्नकर्ता : और हर एक को खुद मन-वचन-काया से इतना निर्णय तो करना ही चाहिए न कि मेरी वजह से दूसरा न गिर जाए, ऐसा हर एक को सोचना तो चाहिए न?

दादाश्री : कोई नहीं सोचता। दादा भगवान के सिवा कोई नहीं सोचता। वर्ल्ड में कोई नहीं सोचता।

'ज्ञानीपुरुष' की टीका न्योता दे नर्कगति को

प्रश्नकर्ता : टीका करनेवाले को कभी भी सही बात पता नहीं चलती न इसीलिए ऐसा करता है न?

दादाश्री : जैसा समझ में आए वैसा करता है। वह टीका करता है उसमें उसका क्या गुनाह है? नासमझी (नादानी)। नासमझ ऐसा नहीं करेगा तो और क्या करेगा? टीका करनेवाले नासमझ हैं तभी करते हैं न? समझदार इंसान तो किसी में नहीं पड़ता। खुद गुनहगार बने ऐसा करेगा ही नहीं न! भले ही सामनेवाले से कुछ लाभ न उठाए तो हर्ज नहीं है। लेकिन टीका करनेवाले खुद का नुकसान करते हैं। ये खुद की मूर्खता ही है न! (कोई) टीका न करे इसीलिए हमने इसे गुप्त रखा है। ये ज्ञानीपुरुष वर्ल्ड के आश्चर्यजनक पुरुष और लोग अगर उनकी टीका में पड़ेंगे तो कौन सी गति में ले जाएगी?

प्रश्नकर्ता : नर्कगति, दादा।

दादाश्री : इसीलिए हम बहुत गुप्त रखकर ऐसा करते हैं। वर्ना ये जगत् के लोग तो बेचारे नासमझी की वजह से हमारी भी टीका करने में पड़ जाएँगे। अरे! और कहीं भी टीका की होगी, पूरे वर्ल्ड की टीका होगी तो मैं एक घंटे में पाप धो दूँगा। लेकिन यहाँ की गई टीका नहीं पुसाएगी, इसीलिए तू एक घर छोड़ देना!

ऊँचे चढ़ने में हर्ज नहीं है लेकिन नीचे गिर जाए तो हमें हर्ज है। कोई भी इंसान गिर जाए, ऐसा हमने इस ज़िंदगी में कोई भी कार्य नहीं किया है। ज्ञानीपुरुष की टीका ज़रा सी भी करेंगे न तो लोग बेचारे गिर जाएँगे। एक बार जिनकी आरती करने से मोक्ष मिल जाता है, उनकी एक ही बार टीका करने से क्या होगा? आपको क्या लगता है? इसीलिए हम नहीं बताते। इंसान ऐसे दोषित नहीं होते कि टीका करे, नासमझी से करते हैं। लेकिन भुगतना तो पड़ेगा ही न!

नया जोखिम मोल मत लेना

अंबालाल पटेल की अगर टीका करनी है तो करना। उनके साथ झगड़ना हो तो झगड़ लेना लेकिन 'यह ज्ञान गलत है' ऐसा मत करना। नया जोखिम मोल मत लेना।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान पर शंका मत करना।

दादाश्री : हाँ, उसमें जोखिम है। उस जोखिम में मत पड़ना। यह अद्‌भुत विज्ञान है, आश्चर्यजनक है! जो दस लाख वर्षों में उत्पन्न नहीं हुआ ऐसा आश्चर्यजनक, अद्‌भुत विज्ञान! एक घंटे में तो इंसान में परिवर्तन आ जाता है।

ज्ञानी की निर्दोष दृष्टि

हम (किसी की भी) निंदा नहीं कर सकते। हमारे लिए तो वह भी समान है। क्योंकि हम आत्मदृष्टि से आत्मा देखेंगे। हम बाहर का पैकिंग नहीं देखते,

इसीलिए हमारा समान रहता है। गधे की भी निंदा नहीं करते तो फिर उसकी तो कैसे कर सकते हैं हम। लेकिन अगर लोग पूछें तो ऐसा कहते हैं कि, 'भाई, ज़रा सोच-समझकर व्यवहार करना।'

यों हम किसी की ज़रा सी भी निंदा नहीं करते। ये किस चीज़ की निंदा कर रहे हैं? गलत चीज़ की निंदा कर रहे हैं। ऐसी चीज़ नहीं होनी चाहिए। इंसान में गलत चीज़ नहीं होनी चाहिए। चाहे कैसा भी हो, दारु पीता हो, नालायक हो लेकिन उसके बाहरी भाग से ही हमें दिक्कत है। सभी मनुष्यों के अंदर हमें भगवान दिखाई देते हैं।

हम टीका नहीं करते। हम उसके आत्मा को नमस्कार करते हैं और उसके बाहरवाले हिस्से को निर्दोष जानते हैं। हमें दुनिया में कोई भी दोषित नहीं दिखाई देता। टीका किसकी कर सकते हैं? दोषित की टीका कर सकते हैं। हमें दोषित दिखाई ही नहीं देता। पूरा जगत् निर्दोष ही है। हमसे पूछे, बात करे और अगर हम साफ-साफ नहीं कहेंगे तो वह हमारी हाज़िरी में ही गलत रास्ते पर चलेगा। हम कह देते हैं, बाद में उसे जहाँ जाना हो वहाँ जाए। हमारे सिर पर तो बहुत जोखिमदारी है। जितनी जोखिमदारी भगवान के सिर पर होती है उतनी ही हमारे सिर पर है। थोड़ी सी, पाँच प्रतिशत छोड़कर बाकी की पचानवे प्रतिशत जोखिमदारी हमारे सिर पर है। भगवान की सौ प्रतिशत जोखिमदारी होती है।

पक्षपाती करते हैं निंदा

भगवान निष्पक्षपाती होंगे या पक्षपाती होंगे?

प्रश्नकर्ता : निष्पक्षपाती।

दादाश्री : हाँ। अगर पक्षपात में पड़ोगे न तो सामने पक्षवाले की निंदा ही करोगे। क्या करोगे आप? निंदा करने से तो ऐसा हुआ कि, मेरा सही और सामनेवाले का गलत। उसमें भी, एक अक्षर भी नहीं जानता। लोगों ने मत पकड़वा दिए हैं। मत पकड़ते-पकड़ते आत्मा खो दिया। इसालिए अब मैं मत छुड़वाने आया हूँ।

भगवान की निंदा करके अधोगति को न्योता देते हैं

(लोगों ने तो) हर कहीं भगवान के साथ भी बैर करवाए। महावीर भगवान के साथ भी बैर, औरों के साथ भी बैर। हमें अपना करने में हर्ज नहीं है। खुद के स्टैन्डर्ड के अनुसार करने में हर्ज नहीं है लेकिन खुद के स्टैन्डर्ड का करते-करते अगर अन्य भगवानों की निंदा करेंगे तो हमने यहाँ जो कुछ कमाया है, वह चला जाएगा और अधोगति में, नर्क में जाना पड़ेगा। निंदा मत करना, संधि करवानेवाली बातें करना। अब यह तो कितना बड़ा तिरस्कार कहलाएगा? ये मैं आप से, पढ़ी-लिखी प्रजा से कह रहा हूँ कि अब यह सब एक तरफ रख दो। निष्पक्षपाती बनो। भगवान निष्पक्षपाती थे। ये पक्षपात किसने डाले? अपना नाम कमाने के लिए और सत्ता चलती ही रहे इसलिए लोगों ने अलग-अलग पक्ष चलाए।

भयंकर दुराग्रह, वही अवगाढ़ मिथ्यात्व है। जो मिथ्यात्व अपना स्थान कभी भी छोड़े ही नहीं, कुछ टेढ़ा हो जाए, उल्टा हो जाए, सीधा हो जाए, लेकिन स्थान नहीं छोड़े वही अवगाढ़ मिथ्यात्व। यह हकीकत है कि हमारे यहाँ निंदा तो किसी की भी होती ही नहीं न! क्योंकि वह हमारा ही स्वरूप है तो फिर निंदा कैसे हो सकती है?

टीका, वह एक प्रकार का रोग

प्रश्नकर्ता : दादा, किसी को टीका करने की आदत पड़ जाए तो उसे रोग कहते हैं?

दादाश्री : सब रोग ही है। रोग के कारण ही यह सब है। वीतराग अर्थात् निरोगी। कोई तीर्थंकर

ऐसे नहीं होते कि जिनमें ज़रा सा भी शारीरिक, मानसिक या वाचिक रोग हो। वाचा, वाणी भी निरोगी होती है। और लोगों की वाणी तो देखो, कैसी रोगवाली है! है न रोगवाली? भोजन के लिए बुलाने आए तो भी, वह इस तरह से कहता है कि अपने मन में लगता है कि इससे तो नहीं आया होता तो अच्छा था। अच्छे काम के लिए कहने आता है फिर भी बुरी वाणी निकलती है।

भावसंज्ञा के आधार पर रागी-द्वेषी वाणी

प्रश्नकर्ता : हर एक इंसान की इच्छा ऐसी होती है कि उसकी वाणी एकदम अच्छी निकले, फिर भी ऐसी निकल जाती है, इसका क्या कारण है?

दादाश्री : वह जो भाव है न, वह भावसंज्ञा है, अर्थात् जिस जगह पर वह खड़ा है, वहाँ से जो कुछ देखता है, वह राग-द्वेष से देखता है। भाव यानी राग-द्वेष। ऐसे देखे तो राग होता है, वैसे देखे तो द्वेष होता है इसीलिए फिर यह राग-द्वेषवाली वाणी निकलती है। बस, और कोई लेना-देना नहीं है। जैसा दिखाई देता है, वैसा ही राग अलापता है।

प्रतिपक्षी भाव के प्रतिघोष

सामान्य व्यवहार में बोलने में हर्ज नहीं है लेकिन देहधारी मात्र के लिए कुछ उल्टा-सीधा कहा तो भीतर टेपरिकॉर्ड हो गया! इस संसार के लोगों की टेप बनानी हो तो देर कितनी? ज़रा सा उकसाओ तो प्रतिपक्षी भाव टेप होते ही रहेंगे। 'तेरे में निर्बलता इतनी है कि उकसाने से पहले ही तू बोलने लगेगा।'

प्रश्नकर्ता : बुरा बोलना तो नहीं है, लेकिन बुरा भाव भी नहीं आना चाहिए न?

दादाश्री : भाव नहीं आना चाहिए, वह बात सही है। भाव में आता है वह बोल में आए बगैर रहता ही नहीं। इसलिए बोलना यदि बंद हो जाए न तो भाव बंद हो जाएँगे। ये भाव तो बोलने के पीछे रहे प्रतिस्पंदन है। प्रतिपक्षी भाव तो उत्पन्न हुए बगैर तो रह ही नहीं सकते न! हमें प्रतिपक्षी भाव नहीं होते। वहाँ तक आपको भी पहुँचना है। इतनी अपनी निर्बलता जानी ही चाहिए कि प्रतिपक्षी भाव उत्पन्न न हो। और अगर कभी हो जाएँ तो हमारे पास प्रतिक्रमण का हथियार है, उससे मिटा देने हैं। पानी कारखाने में गया, लेकिन जब तक बर्फ नहीं बना है, तब तक परेशानी नहीं है। बर्फ हो जाने के बाद हाथ में नहीं रहता है।

कुदरत की टेप में रिकॉर्ड होते हैं तेरे भाव

ये टेपरिकॉर्डर और ट्रान्समीटर ऐसे तो कई साधन आजकल बन गए हैं। उनसे बड़े-बड़े लोगों को डर लगा ही रहता है कि कोई कुछ रिकॉर्ड कर लेगा तो? अब इसमें (टेप-मशीन में) तो शब्द टेप हो जाते हैं, इतना ही है। लेकिन इसमें मनुष्य की बॉडी-मन वगैरह सब टेप हो सकता है। लोगों को उसका ज़रा सा भी डर नहीं लगता। अगर सामनेवाला नींद में हो और आप कहो कि, 'यह नालायक है।' तो वह उसके अंदर टेप हो जाता है फिर वह उसे फल देता है। इसलिए सोते हुए इंसान के बारे में एक अक्षर भी नहीं बोलना चाहिए क्योंकि सब टेप हो जाए, ऐसी यह मशीनरी है। अगर बोलना चाहो तो अच्छा बोलना कि, 'साहब, आप बहुत अच्छे इंसान हैं।' अच्छा भाव रखना, तो फल स्वरूप आपको सुख मिलेगा। लेकिन ज़रा सा भी गलत बोले, अंधेरे में भी बोले या अकेले में बोले तो भी उसका फल कड़वे ज़हर जैसा मिलेगा। यह सबकुछ टेप हो जाता है इसलिए अच्छा टेप करवाओ।

टेप होते ही तुरंत मिटा दो

प्रश्नकर्ता : जिसे टेप नहीं करना है उसके लिए क्या रास्ता है?

दादाश्री : कोई भी स्पंदन नहीं डालता है। सब देखते ही रहना है। लेकिन ऐसा होता नहीं है

न! यह भी मशीन है और फिर पराधीन है। इसलिए हम दूसरा रास्ता बताते हैं कि टेप हो जाए तो तुरंत ही मिटा दो, तो चलेगा। यह प्रतिक्रमण, वह मिटाने का साधन है। इससे एकाध जन्म में बदलाव आ जाता है और सब बोलना बंद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : शुद्धात्मा का लक्ष्य बैठने के बाद निरंतर प्रतिक्रमण चलते ही रहते हैं।

दादाश्री : इसलिए आपकी ज़िम्मेदारी नहीं रहती। जो बोलते हो उसका प्रतिक्रमण हो जाए तो ज़िम्मेदारी नहीं रहेगी न! बोलना, लेकिन राग-द्वेष रहित बोलना। बोल दो तो तुरंत प्रतिक्रमण विधि कर लेना।

मन-वचन-काया का योग, भावकर्म-द्रव्यकर्म-नोकर्म चतुरभाई तथा चतुरभाई के नामकी सर्व माया से भिन्न ऐसे 'शुद्धात्मा' का स्मरण करके कहना है कि, 'हे शुद्धात्मा भगवान, मैंने ऐसा कह दिया, भूल (गलती) हो गई। इसलिए उसकी माफी माँगता हूँ। और वह भूल अब फिर से नहीं करूँगा, ऐसा निश्चय करता हूँ। ऐसी भूल फिर से नहीं करने की शक्ति दीजिए।' 'शुद्धात्मा' को याद किया अथवा 'दादा' को याद किया और कहा कि, 'यह भूल हो गई है।' तो वह है आलोचना और उस भूल को धो डालना वह है प्रतिक्रमण और वह भूल वापस नहीं करूँगा, ऐसा निश्चय करना, वह प्रत्याख्यान है। यह 'अक्रम विज्ञान' है, इसलिए प्रतिक्रमण रखना पड़ा है।

प्रतिक्रमण से बंधें खेद के स्टेशन

प्रश्नकर्ता : मुझे नहीं कहना था फिर भी जो कह दिया, यह जो 'कह दिया' वह चंदूभाई का विभाग है और 'ऐसा नहीं कहना चाहिए था,' ऐसा जो कहता है, वह क्या आत्मा का विभाग है?

दादाश्री : ठीक है। क्योंकि वह ज्ञान का विभाग है लेकिन चंदूभाई का विभाग आप जानते हो न?

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसा कह देने के बाद ऐसा लगता है हमने व्यर्थ ही कह दिया।

दादाश्री : हाँ। अगर इतना भान हो जाए कि ऐसा नहीं कहना चाहिए, तो भी दाग़ छूट जाएगा।

प्रश्नकर्ता : बाद में कहते हैं, 'ऐसा कहने में फायदा नहीं है।'

दादाश्री : कहने में फायदा न हो, फिर भी कह देते हैं। लेकिन कहने के बाद 'यह गलत है' ऐसा समझ में आ जाए तो भी बहुत हो गया। तो भी दाग नहीं लगेगा।

प्रश्नकर्ता : इसके लिए बहुत ज़्यादा खेद रहता है कि हमसे ऐसा नहीं होना चाहिए।

दादाश्री : बचपन में भी खेद रहता था?

प्रश्नकर्ता : नहीं, कुछ नहीं।

दादाश्री : तो फिर खेद कहाँ से आया? मुझे ऐसा लगता है कि यह स्टेशन तूने नया बनाया है। लेकिन खेद के स्टेशन बनाए किसने?

प्रश्नकर्ता : आपके ज्ञान देने के बाद ऐसा हुआ है।

दादाश्री : ऐसी बात है? अच्छा है!

प्रश्नकर्ता : जो कह दिया उसके लिए प्रतिक्रमण करते रहें तो छूट सकते हैं न?

दादाश्री : सौ-साल से पूरा कमरा खराब हो रहा हो, लेकिन दस दिन लेकर बैठ जाएँ और सब इकट्ठा करके लेप कर दें और ऊपर संगमरमर लगा दें, तो फिर सभी भूल मिट जाएगी न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : बस, इतना ही।

प्रतिक्रमण से व्यवहार शुद्धि

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने के बाद हमारी वाणी बहुत ही अच्छी हो जाएगी? इसी जन्म में ही?

दादाश्री : उसके बाद तो ओर ही प्रकार का होगा! हमारी वाणी अंतिम कोटि की निकलती है, उसका कारण प्रतिक्रमण ही है और निर्विवादी है, उसका कारण भी प्रतिक्रमण ही है। नहीं तो विवाद ही होता। सभी जगह विवादी वाणी होती है। व्यवहार शुद्धि बगैर स्याद्वाद वाणी नहीं निकल सकती। पहले व्यवहार शुद्धि होनी चाहिए।

ऐसे कारणों का सेवन करेंगे तो सुधर जाएगा सब

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस जन्म में रटता ही रहे कि, 'बस, स्याद्वाद वाणी चाहिए' तो ऐसी वाणी हो जाएगी क्या?

दादाश्री : लेकिन अगर समझकर 'स्याद्वाद' बोलेगा तब। वह खुद समझे ही नहीं और बोलता रहे या राग अलापता रहे तो कोई फायदा नहीं होगा।

हम जब तय करें कि, 'किसी को दु:ख न हो ऐसी वाणी बोलनी है, किसी धर्म को अड़चन न हो, किसी धर्म का प्रमाण आहत न हो ऐसी वाणी बोलनी चाहिए।' तब वाणी अच्छी निकलेगी।

स्याद्वाद वाणी की भूमिका कब उत्पन्न होती है? जब अहंकार शून्य हो जाए। पूरा जगत् निर्दोष दिखाई दे, किसी भी जीव का किंचित्मात्र दोष न दिखे, किसी का किंचित्मात्र धर्म का प्रमाण आहत न हो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अगर हम ऐसा कहें कि 'दादा की वाणी जैसी ही वाणी चाहिए' तो?

दादाश्री : 'चाहिए' ऐसा बोलने से कोई फायदा नहीं होगा न! वह तो, ऐसी वाणी की भावना करनी पड़ती है। वाणी तो फल है। बीज डालना है। किसी जीव को किंचित्मात्र दु:ख नहीं हो ऐसी वाणी बोलने की भावना करें तो वैसी ही टेप तैयार हो जाती है। ऐसी वाणी रिकॉर्ड हो जाती है। 'हमारी भावना क्या है?' इस पर से कोड वर्ड बनता है।

यह 'ज्ञान' मिलने के बाद खुद को यह आशय सेट करना आ जाता है। 'ज्ञान' मिलने से पहले तो किसी आशय का भान ही नहीं होता न! इसीलिए किसी भी तरह का सेट हो जाता है। अब जैसा आशय सेट करेंगे वैसा मिलेगा।

नए 'कोड' के अनुसार 'इफेक्ट'

प्रश्नकर्ता : नया कोड हो तो अगले जन्म में इफेक्ट देगा या इस जन्म में भी इफेक्ट देगा?

दादाश्री : ये कुम्हार मटके बनाते हैं, उस मटके को भट्ठी में पकाकर फिर एक घंटे बाद निकाल लेंगे, तो क्या होगा?

अगले जन्म में सबकुछ अच्छा होगा, ऐसा आपने माना, इसीलिए तो आपको मुझ पर श्रद्धा आई, नहीं तो यहाँ बैठ कैसे पाते? इस जन्म में तो क्या होगा कि आपकी जिस कोडवाली भाषा है, वह पूरी हो जाएगी और फिर आपकी वैसी भाषा ही नहीं निकलेगी।

प्रश्नकर्ता : तब फिर मौन हो जाना है?

दादाश्री : मौन ही हो जाना है। मौन अर्थात् ऐसा मौन नहीं कि एक अक्षर भी नहीं बोलें। मौन अर्थात् व्यवहार के लिए ज़रूरी हो उतनी ही वाणी रहेगी। क्योंकि एक ही टंकी का भरा हुआ माल, वह खाली तो होना ही है।

वाणी बोलते समय जागृति

प्रश्नकर्ता : वाणी बोलते समय किस प्रकार की जागृति रखनी चाहिए?

दादाश्री : जागृति ऐसी रखनी है कि 'ये बोल बोलने से किस-किसका प्रमाण किस प्रकार से आहत हो रहा है', उसे देखना है।

सामनेवाले का दिल बैठ जाए, ऐसा बड़ा पत्थर मारें, तो उस समय अपनी जागृति उड़ ही जाएगी! छोटा पत्थर मारें तो जागृति नहीं जाएगी। यानी पत्थर छोटा हो जाएगा, तब वह जागृति आएगी।

प्रश्नकर्ता : तो हम पत्थर किस तरह छोटा करें?

दादाश्री : प्रतिक्रमण से!

प्रश्नकर्ता : टेप हो चुकी वाणी कैसे बदल सकते हैं?

दादाश्री : अगर आप सिर्फ ज्ञानी से आज्ञा लेकर मौनव्रत धारण करो, तो उसका उपाय है। वर्ना वह तो कुदरत को बदलने जैसी चीज़ है। इसलिए 'ज्ञानीपुरुष' से आज्ञा लेकर करें, तो 'ज्ञानीपुरुष' जोखिमदार नहीं बनते और जोखिमदारी यों ही बीच में ही खत्म हो जाती है। यानी यही एक उपाय है।

जितना मौन धारण करोगे, उतना ही बुद्धि बंद होगी। जब मौन हो जाओगे तब माना जाएगा कि जगत् को समझ लिया।

'गलत (उल्टा) बोल' खुद को ही पहुँचता है

इस दुषमकाल में वाणी से ही बंधन है। सुषमकाल में मन से बंधन था। इसीलिए किसी के लिए एक अक्षर भी नहीं बोलना चाहिए। शब्द बोलना का मतलब तो जोखिमदारी है। किसी को गलत कहना, वह अपने आत्मा पर धूल उड़ाने के बराबर है। उल्टा सोचने से भी खुद पर ही धूल उड़ती है, इसीलिए इस उल्टे का आपको प्रतिक्रमण करना है, तो उससे छूटा जा सकेगा।

हमें जैसा पसंद आए, वैसा बोलना चाहिए। प्रॉजेक्ट ऐसा बनाओ कि आपको अच्छा लगे। ये सब आपका ही प्रॉजेक्शन है। इसमें भगवान की कोई दखल नहीं है। किसी पर डालो तो अंत में सारी वाणी आप पर ही आती है। इसीलिए ऐसी शुद्ध वाणी बोलो कि शुद्ध वाणी ही आप पर भी आए।

हम किसी से भी 'तू गलत है', ऐसा नहीं कहते। चोर को भी गलत नहीं कहते। क्योंकि उसके व्यू पोइन्ट से वह सही है। हाँ, चोरी करने का फल क्या मिलेगा, ये हम उसे 'जैसा है वैसा' समझा देते हैं।

जो आपको पुसाए वही उधार देना

आपको क्या पुसाता है, वह आप औरों को दो। इस बात में कोई गुनाह है? नियम समझ में आए, ऐसा नहीं है?

व्यवहार का अर्थ क्या है? देकर लो, या फिर लेकर दो, वह व्यवहार है। 'मैं' किसी को देता भी नहीं और 'मैं' किसी का लेता भी नहीं हूँ। मुझे कोई देता भी नहीं। 'मैं' मेरे स्वरूप में ही रहता हूँ।

व्यवहार इस प्रकार बदलो कि हमें देकर लेना है। यानी वापस देने आए उस घड़ी यदि पुसाता हो तो ही देना। 'वीतराग' क्या कहते हैं? 'तुझे मार खानी हो तो मार कर आ। तुझे निंद्य बनना हो तो निंदा कर।'

निंदा करके करते हैं जोखिमभरा व्यापार

व्यापारियों ने तो तरह-तरह की बहुत मिलावटें की है। फिर जब लोग उनकी निंदा कर रहे थे न तब मैंने कहा कि 'निंदा मत करना, उनकी टिकट आ चुकी है।' ये जो दो पैर हैं न उनके बजाय चार पैरोंवाला रिज़र्वेशन हो चुका है। उनकी निंदा करके क्या मिलेगा?

अर्थात् इस तरह (निंदा करके) चार गतियों में भटकते रहते हैं। एक घंटे की निंदा करके इंसान

पशुओं की योनि में आठ बार जाने का आयुष्य बाँध लेता है। निंदा करना जोखिमभरा व्यापार है।

किसी की निंदा करने का हमें राइट नहीं है यह करार के विरुद्ध किया कहलाएगा। उनके दुर्गुण धो दें, हम कोई ऐसे मूर्ख नहीं है। अपने घर के कपड़े ही नहीं धोए जाते तो किसी और के कपड़े कहाँ से धो दें?

यानी किसलिए जीते हैं उस पर आधार है। लोगों की निंदा करने, लोगों की बदबोई करने। मैं तो सब जानता हूँ। इसीलिए आपको और भी जीना हो तो हर्ज नहीं है। एक व्यक्ति ने भगवान से पूछा कि, 'जो नींद में हो वह ज़्यादा अच्छा है या जागता इंसान अच्छा है?' तब कहा, कि 'जो लोगों को दुःख नहीं देता और सुख देता है वह जागता अच्छा और जो दुःख देता है उसका सोते रहना ही अच्छा,' सोता ही रहेगा न! कैसा काम कर रहा है, उस पर आधार है।

जिसे नहीं दिखता, उसकी टीका नहीं करनी चाहिए

खुली आँखों से सो रहे हैं यानी आँखों से दिखाई नहीं देता, आँखें होने के बावजूद भी दिखाई नहीं देता। अब जिसे दिखाई देता है उसे क्या उसकी टीका करनी चाहिए जिसे दिखाई नहीं देता?

प्रश्नकर्ता : नहीं, टीका करनी ही नहीं चाहिए।

दादाश्री : क्यों नहीं?

प्रश्नकर्ता : जिसे दिखाई ही नहीं देता तो टीका क्या करनी दादा?

दादाश्री : हाँ। उस बेचारे को दिखाई ही नहीं देता है। उसकी टीका हम कहाँ करे? जिसे दिखाई देता है उसे उसकी टीका नहीं करनी चाहिए और फिर जिसे दिखाई नहीं देता वह देखनेवाले को धक्का मारता है कि आप कहाँ से आए बड़े? इतने दिनों से हम चल रहे हैं, हमें तो कोई चोट नहीं लगती कभी अगर गड्ढे में गिर जाएँ तो घुटने छिल जाते हैं। कोई नदियाँ-वदियाँ बीच में नहीं आतीं। और हम शोर मचाते हैं कि 'अरे! बड़ी-बड़ी नदियाँ बीच में हैं और पुल) टूट गए हैं।' इसीलिए वह तैश में आ जाता है कि आप कहाँ से आए बड़े? हम जो दिखाते हैं उसे वे आँखों से देख नहीं पाते इसीलिए वे नहीं सुनते। अंधे लोगों की तो भरमार है, उनके शुद्धात्मा देख लेने हैं और समभाव से निकाल करना है।

वैष्णव जन तो तेने रे कहिए...

प्रश्नकर्ता : जब मैं पढ़ रहा था तो उसमें ऐसा आता था कि, 'वैष्णव जन तो तेने रे कहिए जे पीड़ पराई जाने रे, सकल लोकमा सहुने वंदे निंदा न करे केनी रे।' नरसिंह मेहता ने कहा है न कि वैष्णव निंदा नहीं करते।

दादाश्री : हाँ। वैष्णव किसी की निंदा नहीं करते। वास्तव में नियम क्या है? कि जो निंदा करता है उसके खाते में डेबिट होता है और जिसकी निंदा करते हैं उसके खाते में क्रेडिट होता है। आपको अगर करनी हो तो करना, उसमें कोई बात नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लोगों की निंदा करने की हमारी जो आदते हैं, उन्हें हमारे खुद के अहंकार से दूर कर देना चाहिए न?

दादाश्री : सही बात है।आप जिसकी निंदा करोगे, नियम से वहाँ उसको ज़रूर फायदा होगा ही। गुणगान करोगे न तो आपको फायदा होगा और उसे नुकसान नहीं होगा।

प्रश्नकर्ता : बुद्धिशाली इंसान के तौर पर मेरे मन में ऐसा होता था कि नरसिंह मेहता ने एक ही बात दो बार क्यों लिखी है। लेकिन आज आपके पास से खुलासा मिल गया।

दादाश्री : सावधान कर दिया आपको, वे कहते हैं कि निंदा रोग है... समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : (निंदा करने में) नेगेटिव भी बताया और वंदन करने से उसका पॉज़िटिव हो जाता है, ऐसे दोनों चीज़ें उन्होंने बताई।

दादाश्री : पॉज़िटिव हो जाता है और वंदन करने से उसका नुकसान नहीं होता और हमारा फायदा होता है।

हिताहित का भान खो देता है निंदा करके

(यह तो) जीव को ज़रा सा भी भान नहीं है। खुद के हित का ज़रा सा भी भान नहीं है। शास्त्रकारों ने कहा है कि जगत् के लोगों को हिताहित का भान नहीं है और खुली आँखों से सो रहे हैं। शास्त्रकारों से अगर हम पूछें कि 'क्या साहब आप सबकी निंदा करते हैं?' 'निंदा नहीं करते, खुली आँखों से सो रहे हैं,' कहेंगे। खुद का ही अहित कर रहे हैं। बेचारा एक तो यह नहीं जानता कि खुद को फायदा नहीं हो रहा है और ऊपर से सामनेवाले को गाली देकर लगभग चालीस रुपये का नुकसान करता है। देखो न, जान-बूझकर नुकसान उठाते हैं।

अपना मोक्षमार्ग है। हमें किसी की निंदा में नहीं पड़ना चाहिए, लोग भले ही हमारी निंदा करें, उन्हें छूट है, कोई हर्ज नहीं है। किसी की निंदा में न पड़कर अगर हमारी निंदा कोई करे तो उस पर शांति से सोचना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : जमा कर लेनी है।

दादाश्री : हं। उस बेचारे की कमज़ोरी है न! ऐसा तो इस काल में ही शुरू हुआ है, खंडन-मंडन! निरंतर खंडित होते रहना है। पूरे दिन अकुलाहट कलह। 'किसी की ज़रा सी भी टीका करना केवलज्ञान में बाधक है। अरे, आत्मज्ञान में भी बाधक है।' ये (अक्रम का सिलसिला) तो कुदरती तौर पर चल पड़ा है तो अपना काम निकाल लेना है।

करार के भय से सतर्क रहना

यह अक्रम विज्ञान है, इसीलिए सतर्क रहना है। इतना ध्यान रखना है कि चलते-फिरते जीव के साथ फिर से करार न बंध जाए। बाकी पकौड़े जितने भी खाने हों उतने खाना, जलेबी जितनी खानी हों उतनी खाना। अन्य सबकुछ, श्रीखंड खाना हो उतना खाना। आपको सारी छूट है। जैसे कपड़े पहनने हों वैसे पहनना, जितनी साड़ियाँ पहननी हों उतनी पहनना लेकिन इतना ध्यान रखना कि चलते-फिरते जीव के साथ फिर से करार न हो जाए। शायद ऐसा हो भी जाएगा। भूल तो होगी ही, पूर्व का अभ्यास है न! इसीलिए। हमें उन्हें कहना है कि 'चंदूभाई, दादा का ज्ञान प्राप्त करने के बाद आपने ऐसा क्यों किया? अब माफी माँग लो' 'ऐसा क्यों किया,' बस इतना ही कहना है।

सिर्फ इतना ही भय स्थान है, और कुछ नहीं। किसी को देखकर हमें द्वेष हो जाए, किसी लँगड़े व्यक्ति को देखकर हमें उसकी टीका करने का मन करने लगे, ऐसा हम कैसे कर सकते हैं? किसी जीव को हम से किंचित्मात्र दुःख न हो। बस इतना करार न बंध जाए इतना ध्यान रखना है।

दादा भगवान की टीका का परिणाम क्या?

यह टीका करने जैसी चीज़ नहीं है क्योंकि अगर मैं खुद दादा भगवान बन बैठा होता तो टीका करते। लेकिन दादा भगवान तो भगवान हैं। अब अगर उनकी टीका करनी हो तो आपको जोखिम है। मैं तो भगवान का भक्त बन बैठा हूँ। और फिर मैं भी (अंदरवाले को नमस्कार) करता हूँ। (नमस्कार) यानी टीका करने जैसी चीज़ नहीं है। वर्ना तो यहाँ एक टीका करेगा न तो नर्क का अधिकारी बनेगा, ऐसा है यह। अब तक यह बताया नहीं था, अब बता रहे हैं। अब लोगों की समझ में आ रहा है, वर्ना टीका किए बगैर रहते

नहीं न। अपने लोग तो अक्ल के बोरे हैं, टीका किए बगैर नहीं रहते। सुल्टा (सही) न आए लेकिन उल्टा (गलत) तो आता ही है। और भगवान महावीर ने ही कहा था कि इस काल में जो जीव आए हैं वे ऐसे हैं कि जिन्हें चारों आरे (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) में छान नहीं पाए ऐसा माल बचा है और उन्हें हमने पूर्व विराधक नाम दिया है। विराधना करते-करते ही आए हैं, और वह सामान बच गया है। अब अंतिम छलनी दी है जितने छन जाएँ उतने। क्योंकि वे सभी किस प्रकार छनेंगे? बड़े कंकर के साथ मिट्टी लगी होती है न उस मिट्टी के साथ फिर बारीक रेत चिपकी होती है तो सख्त गर्मी से रेत अलग हो गई। इसीलिए अब छलनी से छानेंगे तो थोड़ी बहुत अलग हो जाएगी। फिर राम तेरी माया।

भावना करके बनो तद्रूप

ये तो, भावनाएँ करनी हैं। अभी और एक जन्म तो शेष रहा है न, तो ये भावनाएँ फल देंगी। तब तो आप भावनारूप ही हो गए होंगे। जैसी भावनाएँ लिखी हुई हैं वैसा ही वर्तन होगा, लेकिन अगले जन्म में! बीज अभी बोया है इसलिए आप कहो कि 'लाओ, उसे भीतर से कुरेदकर खा जाएँ।' तो वह नहीं चलेगा।

प्रश्नकर्ता : परिणाम इस जन्म में नहीं, अगले जन्म में आएगा?

दादाश्री : हाँ, अभी एक-दो जन्म शेष रहे हैं। इसलिए ये बीज बोते हैं, कि अगले जन्म में 'क्लिअर' (स्वच्छ) हो जाएँ। यह तो जिसे (अच्छे) बीज बोना है उसके लिए है।

ये कलमें तो सिर्फ बोलनी ही हैं। प्रतिदिन भावना ही करनी है। इससे तो बीज बोना है। बोने के बाद जब फल प्राप्त होगा है, तब देख लेना है। तब तक खाद डालते रहना है।

अर्थात् ये नौ कलमें क्या कहती हैं? 'हे दादा भगवान! मुझे शक्ति दीजिए।' अब लोग क्या कहते हैं? 'इनका तो पालन नहीं किया जा सकता।' लेकिन ये करने के लिए नहीं हैं। अरे, नासमझी की बातें क्यों करते हो! इस संसार में सभी ने कहा कि, 'करो, करो, करो'। अरे, करना है ही नहीं है, समझना ही है। और फिर 'मैं ऐसा नहीं करना चाहता और (ऐसा जो हो गया) उसका मैं पछतावा करता हूँ'। ऐसे 'दादा भगवान' के पास माफी माँगनी है। अब 'यह नहीं करना है' ऐसा कहा न, वहीं से आपका अभिप्राय अलग हो गया। फिर भी अगर करे तो उसमें हर्ज नहीं है। लेकिन अभिप्राय अलग हुआ कि छूटा! यह मोक्षमार्ग का रहस्य है, वह जगत् के लक्ष्य में होता नहीं न!

प्रश्नकर्ता : लोग 'डिस्चार्ज' में ही परिवर्तन चाहते हैं, परिणाम में ही परिवर्तन लाना चाहते हैं ये लोग?

दादाश्री : हाँ। अर्थात् जगत् को यह लक्ष्य मालूम ही नहीं है, इसकी समझ ही नहीं है। मैं उसे अभिप्राय से मुक्त करना चाहता हूँ। अभी 'यह गलत है' ऐसा आपका अभिप्राय हो गया। क्योंकि पहले 'यह सही है' ऐसा अभिप्राय था और इसलिए संसार खड़ा रहा है और अब 'यह गलत है' ऐसा अभिप्राय हो गया, तो मुक्त हो जाएगा। अब यह अभिप्राय किसी भी संयोग में फिर बदलना नहीं चाहिए!

खुद की गैरजिम्मेदारी से अटका है मोक्ष

वातावरण में सारे परमाणु ही भरे पड़े हैं। इसीलिए तो हम कहते हैं कि किसी की निंदा मत करना। किसी को गलत कहा तो अपने आत्मा पर धूल डालने के बराबर है। अपने जोखिम का भान ही नहीं है। इसलिए गैरजिम्मेदारीवाला मत बोलना, गैरजिम्मेदार वर्तन मत करना और सब पॉज़िटिव लेना। किसी का भला करना चाहो तो करना। लेकिन

बुरे में मत पड़ना और बुरा मत सोचना। किसी का बुरा मत सुनना, बहुत जोखिमदारी है। इतने बड़े जगत् में, मोक्ष तो खुद के भीतर ही पड़ा है, लेकिन मिलता नहीं है! और न जाने कितने ही जन्मों से भटक रहे हैं!भूल मिटानी पड़ेगी भूल के साथ मोक्ष में नहीं जा सकते।

ज्ञान से समझकर अब अपना काम निकाल लो

जो पराया है उसे अपना बनाने गए इसीलिए सारी मुसीबतें खड़ी हो गई हैं। कहने के बजाय नहीं कहने में ज़्यादा फायदा है। कहने में फायदा नहीं है। कहने से तो बल्कि ज़्यादा करेंगे और जो कहेंगे उससे विपरीत करेंगे इसीलिए टीका किसी की भी मत करना। अगर सामनेवाला व्यक्ति अपने कहे से उल्टा करे तो इस पर से हमें समझ जाना चाहिए कि हम अपना हिसाब ऐसा ही लेकर आएँ हैं, इसीलिए हमें ममता, मत, खिंचाव या आग्रह नहीं रखना है।

हमें व्यक्तिगत बात तक जाने की ज़रूरत नहीं है। किसी भी इंसान की व्यक्तिगत बात करने का मतलब ही नहीं है न। यह तो, साधारण...सामान्य भाव से बात समझने की ज़रूरत है, व्यक्तिगत् तो निंदा कहलाती है। निंदा करने का समय हमारे पास होना ही नहीं चाहिए। यह तो अधोगति में जाने की निशानी है।

इसलिए फुरसत के समय 'दादा भगवान' से हमें शक्ति माँगते रहना है। कर्कश वाणी निकले, निंदा, टीका हो जाए तो उसकी प्रतिपक्षी शक्ति माँगना कि 'मुझे शुद्ध वाणी बोलने की शक्ति दीजिए, स्याद्वाद वाणी बोलने की शक्ति दीजिए, मुदु-ऋजु भाषा बोलने की शक्ति दीजिए,' ऐसा माँगते रहना। स्याद्वाद वाणी यानी किसी को दुःख न हो ऐसी वाणी।

पॉज़िटिव मन बनाए भगवान

प्रश्नकर्ता : हमारी वाणी आपके जैसी, हमारी वाणी कषाय रहित कब होगी?

दादाश्री : आपके जो सारे नेगेटिव शब्द हैं, उन्हें बोलना बंद कर देंगे तब, क्योंकि हर एक शब्द अपने गुण पर्याय सहित होता है।

हमेशा पॉज़िटिव बोलो। अंदर आत्मा है, आत्मा की हाज़िरी है, इसीलिए पॉज़िटिव बोलो। पॉज़िटिव में नेगेटिव नहीं बोलना चाहिए। किसी के पॉज़िटिव का नेगेटिव बोलें तो वह गुनाह है और पॉज़िटिव में नेगेटिव बोलते हैं इसीलिए ये सब मुसीबतें खड़ी हो जाती हैं। 'कुछ भी नहीं बिगड़ा' ऐसा बोलते ही अंदर कितना परिवर्तन हो जाएगा इसीलिए पॉज़िटिव बोलो।

सालों बीत गए लेकिन मुझे ज़रा-सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। किसी भी संयोग में ज़रा सा भी नेगेटिव नहीं हुआ है। अगर लोगों का मन पॉज़िटिव हो जाए तो भगवान ही बन जाएँगे। इसीलिए लोगों से कहता हूँ कि समभाव से *निकाल* करके नेगेटिव छोड़ते जाओ तो फिर पॉज़िटिव तो अपने आप ही रहेगा। व्यवहार में पॉज़िटिव और निश्चय में पॉज़िटिव भी नहीं और नेगेटिव भी नहीं।

- जय सच्चिदानंद

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345 #. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. ३ पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

भावकर्म और द्रव्यकर्म के बीच संबंध

प्रश्नकर्ता : तीन प्रकार के कर्म हैं न, इनमें से भावकर्म और द्रव्यकर्म के बीच में निमित्त-नैमित्तिक संबंध क्या है? वह ठीक से समझा दीजिए।

दादाश्री : द्रव्यकर्म अर्थात् यह जो *शाता-अशाता* भोगना पड़ता है न, वह है द्रव्यकर्म। और फिर ये यश-अपयश मिलता है, वह भी द्रव्यकर्म है। बड़प्पन-छोटापन जो मिलता है, वह द्रव्यकर्म है। आयुष्य अच्छा या कम मिलता है, वह द्रव्यकर्म है। अत: ये वेदनीय, नाम, गोत्र और आयुष्य, ये चार और ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अंतराय। ये आठों आठ द्रव्यकर्म, इनमें से भावकर्म उत्पन्न होते हैं। भावकर्म किस तरह से उत्पन्न होते हैं? तो कहते हैं कि जब *अशाता* वेदनीय आता है, तब बच्चों पर चिढ़ जाता है, वाइफ पर चिढ़ जाता है, *शाता* वेदनीय आया तो खुश हो जाता है। फिर आता है उच्च गोत्रकर्म, अगर उच्च गोत्रकर्म मिले तो खुश होता है। हल्के प्रकार का गोत्रकर्म हो, तब कोई कहे कि 'आप लोग तो हल्के हो' तो फिर दु:ख होता है। अत: इसमें से भावकर्म बंधते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे जो सूक्ष्म परमाणु अंदर पड़े हुए होते हैं, वे क्या द्रव्यकर्म के रूप में पड़े होते हैं?

दादाश्री : हाँ, द्रव्यकर्म के रूप में, सही है। अत: ये सब जो द्रव्यकर्म हैं, तो भावकर्म उत्पन्न होते हैं। लेकिन अगर आप इनके मालिक नहीं बनो तो भावकर्म खत्म हो जाएँगे। आप इसका मालिकीपन मान बैठे हो, उससे ये भावकर्म उत्पन्न होते हैं। इसका मालिकीपना छूट जाए तो फिर भावकर्म खत्म हो जाएगा। भावकर्म खत्म हो जाएगा तो फिर चार्ज कर्म बंद हो जाते हैं और सिर्फ डिस्चार्ज ही रहता है। वे इस देह से भोगने हैं।

प्रश्नकर्ता : भावकर्म में प्रकार और डिग्री उसी अनुसार होती है या उसके प्रकार और डिग्री बदलते हैं?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। एक ही तरह का होता है। वह मूल जगह से रिसता रहता है, उसे भावकर्म कहते हैं। और फिर उससे नए द्रव्यकर्म बनते-बनते तो कितना ही टाइम लग जाता है!

नोकर्म, वे इन्द्रियगम्य हैं

नोकर्म का मतलब क्या है कि ये आँखों से देखे जा सकते हैं, कानों से सुने जा सकते हैं, जीभ से चखे जा सकते हैं, अत: इस जगत् में जितनी भी चीज़ें पाँच इन्द्रियों से अनुभव की जा सकें और मन से जो होता है वे सभी नोकर्म हैं। इसमें मन तो इनका प्रेरक है। फिर जितना भी बुद्धि से, चित्त से और अहंकार से अनुभव होता है न, वे सभी नोकर्म हैं। भावकर्म को घटा (माइनसकर) दें, क्रोध-मान-माया-लोभ को घटा दें तो बाकी के सभी नोकर्म हैं। और क्रोध-मान-माया-लोभ स्थूल हैं नहीं। सूक्ष्म चीज़ है। अंदर गुस्सा करता है, तो वह क्रोध नहीं है। गुस्सा तो परिणाम है। ये सब जितने भी कर्म दिखाई देते हैं और अनुभव किए जा सकते हैं, वे सभी नोकर्म ही हैं। पूरा जगत् नोकर्म पर ही बैठा हुआ है। लेकिन इतने भर से ही लोगों के कर्म नहीं बंधते इसलिए मैं कह देता हूँ कि भावकर्म के अलावा बाकी के सभी नोकर्म हैं। यह पूरी तरह से समझ में नहीं आ सकता।

(परम पूज्य दादाश्री की आप्तवाणी -१३(पू.) में से संकलित)

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

११-१३ जुलाई : कैनेडा के टोरोन्टो शहर में पूज्य श्री के सानिध्य में सत्संग ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पहले दिन से ही बड़ी संख्या में महात्मा आ गए थे। करीब ६०० मुमुक्षु-महात्माओं से हॉल पूरा भर गया था। दूसरे दिन ज्ञानविधि में १६० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। अंतिम दिन दादा दरबार का आयोजन हुआ, जहाँ महात्माओं ने पूज्य श्री से व्यक्तिगत रूप से बात करके अपनी उलझन संबंधित मार्गदर्शन पाया। शाम को आप्तपुत्र द्वारा फॉलोअप सत्संग में भी कई नए महात्मा आए थे।

१४-१६ जुलाई : अमरीका के राले सेन्टर में पूज्य श्री का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ। पहले दिन सुबह बोन्ड पार्क में पूज्य श्री के साथ मॉर्निंग वॉक और इन्फॉर्मल सत्संग आयोजित हुआ। पहले दो दिन शाम को पूज्य श्री के सत्संग में लगभग ५०० महात्मा आए थे और ज्ञान के बहुत गहन प्रश्न पूछे गए। महात्माओं को सत्संग से खुद की प्रगति के लिए पुष्टि मिले, इस हेतु से इस बार सिर्फ सत्संग का ही आयोजन किया गया। अंतिम दिन दादा दरबार में पूज्य श्री के दर्शन के उपरांत उनसे व्यक्तिगत मुलाकात हर एक महात्मा के लिए यादगार बन गई।

१७-१९ जुलाई : शिकागो शहर में तीन दिवसीय सत्संग-ज्ञानविधि कार्यक्रम के दौरान २०० मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। पूज्य श्री के दर्शन और व्यक्तिगत मुलाकात के लिए 'दादा दरबार' के आयोजन से स्थानिक महात्मा बहुत आनंदित हो उठे। ज्ञानविधि के दिन आँधी के साथ बारिश की आगाही थी लेकिन सामान्य बारिश और धूप की वजह से ६०० से ज़्यादा महात्मा उपस्थित थे। जैन सोसायटी में इस कार्यक्रम का आयोजन हुआ था और वहाँ के ट्रस्टियों ने पूज्य श्री से मिलकर उनके प्रति अहोभाव व्यक्त किया।

२०-२२ जुलाई : बर्मिंगहाम शहर के हेले स्पोर्ट्स कॉम्पलेक्स में तीन दिवसीय का कार्यक्रम का आयोजन हुआ। जहाँ लगभग ३५० महात्मा-मुमुक्षुओं की उपस्थिति थी। और ९५ मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। पूज्य श्री के सत्संग के अलावा आप्तपुत्र सत्संग, गरबा, दादा दरबार, आरती वगैरह कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुमुक्षुओं को बहुत नज़दीक से पूज्य श्री के दर्शन मिलने से वे बहुत भाव विभोर हो गए।

२६-३१ जुलाई : दिनांक २६ से ३१ जुलाई, २०१५ फिनिक्स - एरिज़ोना में (यू.एस.ए) पूज्य श्री के सानिध्य में लगभग २५०० महात्माओं ने गुरुपूर्णिमा का भव्य महोत्सव मनाया और यू.एस.ए के अलावा अन्य कई देशों से महात्मा आए थे। शिविर से पहले लगभग २०० महात्माओं के लिए ग्रान्ड केन्यन (जो एरिज़ोन के मुख्य आकर्षण माना जाता है) वहाँ दो दिन की पिकनिक का आयोजन हुआ। २५ जुलाइ, रात्रि पूज्य श्री का आगमन एरिज़ोना के बिल्टमोर रिसॉर्ट में हुआ। एक लंबा कतार बनाकर महात्माओं ने पूज्य श्री का स्वागत किया। २६ जुलाई को वेस्ट कॉस्ट के सेवार्थियों के लिए पूज्य श्री का सत्संग और दर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ। सत्संग शिविर का आरंभ २७ जुलाई से हुआ। सत्संग हॉल में छोटे-छोटे बच्चों ने पूज्य श्री का स्वगात किया। सत्य-असत्य पुस्तक से मिनी पारायण की शुरुआत हुई। पूर्व नियोजित पूज्य श्री के सत्संग के अलावा गुरुपूर्णिमा शिविर में अन्य बहुत सारे कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। सीमंधर स्वामी भगवान की २०० प्रतिमाओं की पूज्य श्री द्वारा प्राणप्रतिष्ठा विधि हुई। २९ जुलाई आयोजित ज्ञानविधि में २६० मुमुक्षुओं ने ज्ञान प्राप्ति की और बाद में बहुत उल्लास से गरबा का आनंद उठाया। शिविर के दौरान एक सेशन खास इंग्लिश में रखा गया, जहाँ पूज्य श्री के संग प्रश्नोत्तरी सत्संग सिर्फ इंग्लिश में हुआ। बच्चों के लिए भी कार्यक्रम का आयोजन हुआ था। २८ जुलाई को LMHT के बच्चों ने एक सुंदर 'क्रिएटिव गेलेक्सी' नामक 'आर्ट फेयर' का आयोजन किया। उन्होंने कई क्रिएटिव चीज़ें बनाई और उनमें दादा के विज्ञान का समावेश करके सुंदर प्रदर्शन किया, इसके अलावा पपेट शो और कल्चरल प्रोग्राम का भी आयोजन किया। गुरुपूर्णिमा के दिन पूज्य श्री ने गुरुपूर्णिमा का संदेश दिया और जगत् कल्याण की भावना की सामायिक करवाई। पूज्य श्री, दादा-नीरू माँ और देव-देवियों की सूक्ष्म उपस्थिति से सर्जित अलौकिक वातावरण में लगभग २५०० महात्माओं ने पूजन-दर्शन किए और गुरुपूनम महोत्सव की समाप्ति हुई। पूज्य श्री द्वारा घोषित किया गया कि अगले साल कैनेडा के टॉरोन्टो शहर में गुरुपूर्णिमा का महोत्सव मनाया जाएगा।

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'आस्था'** पर सोम से शनि रात १०-२० से १०-४० (हिन्दी में)
	✦ **'डीडी'-इन्डिया** पर हर रोज़ सुबह ८ से ८-३० तथा शाम ६-३० से ७ (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० तथा रविवार शाम ५-३० से ६ (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-गिरनार** पर हर रोज़ सुबह ९ से ९-३० (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह १० से १०-३०, दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० (मराठी में)
USA	✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ७-३० से ८ EST (गुजराती में)

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत	✦ **'दूरदर्शन-नेशनल' पर हर सोमवार से शुक्रवार सुबह ८-३० से ९ (समय-वार में परिवर्तन)**
	✦ **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शुक्र दोपहर ३-३० से ४ (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (हिन्दी में)
	✦ **'साधना'** पर हर रोज़ शाम ७-१० से ७-४० (हिन्दी में)
	✦ **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर ३-३० से ४ (गुजराती में)
	✦ **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ रात ९ से ९-३० (गुजराती में)
	✦ **'अरिहंत' चेनल** पर हर रोज़ रात ८-३० से ९ (गुजराती में)
USA	✦ **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह ११ से ११-३० EST
	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७ से ७-३० EST (हिन्दी में)
UK	✦ **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ८-३० से ९ (गुजराती में)
Singapore	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ४-३० से ५ तथा सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)
Australia	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ७-३० से ८ तथा सुबह १० से १०-३० (हिन्दी में)
New Zealand	✦ **'कलर्स' टीवी** पर हर रोज़ सुबह ९-३० से १० तथा रात १२ से १२-३० (हिन्दी में)

USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर हर रोज़ रात ९-३० से १० (गुजराती में)

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. **8155007500** पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460,
अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद: (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर) :** 9924343335,
दिल्ली: 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830006376
यु.के.: +44 330-111-DADA (3232), **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आफ्रिका-दुबई के आगामी सत्संग कार्यक्रम

दार-ए-सलाम

दि. **२१-२२ अक्तूबर** (बुध-गुरु), रात ८ से १० - **सत्संग** तथा **२३ अक्तूबर** (शुक्र) शाम ५-३० से ९-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : डायमंड ज्युबिली होल, मलिक रोड, दार-ए-सलाम, टान्झानिया. **संपर्क :** 689005354, 687980019

मोम्बासा

दि. **२४ और २६ अक्तूबर** (शनि-सोम), रात ८ से १० - **सत्संग** तथा **२५ अक्तूबर** (रवि) शाम ४-३० से ८ - **ज्ञानविधि**
स्थल : श्री विसा ओशवाल वणिक कम्युनिटी, होटेल सफायर के पास, MT रोड. **संपर्क :** 722372424

नैरोबी

दि. **२७-२८ अक्तूबर** (मंगल-बुध), रात ८ से १० - **सत्संग** तथा **२९ अक्तूबर** (गुरु) शाम ५-३० से ९-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : ओशवाल सेन्टर (रींग रोड पार्कलेन्ड), उकेय सेन्टर के सामने. **संपर्क :** 733923232, 711923232

दुबई

दि. **४-५ नवम्बर** (बुध-गुरु), शाम ७ से ९-३० - **सत्संग** तथा **६ नवम्बर** (शुक्र) शाम ५ से ८ - **ज्ञानविधि**
स्थल : ग्रान्ड ऐक्सेलसीयर होटेल, अल मंकुल, कुवैत स्ट्रीट, बर दुबई, दुबई. **संपर्क :** 557316937

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

रतलाम **दि :** 23 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9907252212

उज्जैन **दि :** 24 अक्तूबर **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9630878791
स्थल : भारती ज्ञानपीठ स्कूल, माधव स्टेशन के पास, लोकमान्य तिलक स्कूल के सामने, उज्जैन.

इन्दौर **दि :** 25 अक्तूबर **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 9302354078
स्थल : माँ कनकेश्वरी देवी संस्कार केन्द्र, रेडीमेट कोम्प्लेक्स के पास, परदेसीपुरा, इन्दौर.

अमरावती **दि :** 24 अक्तूबर **समय :** शाम 5-30 से 8 **संपर्क :** 9422335982
स्थल : टाउन होल, नेहरु मैदान, राजकमल चौक, अमरावती.

नागपुर **दि :** 25 अक्तूबर **समय :** शाम 5 से 7 **संपर्क :** 9970059233
स्थल : श्री नागपुर कच्छी विशा ओशवाल समाज, 57/58, अनाथ विद्यार्थी गृह लेआउट, लकडगंज, नागपुर.

भिलाई **दि :** 26 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9827481336

भिलाई **दि :** 27 अक्तूबर **समय :** शाम 6 से 8 **संपर्क :** 9827481336
स्थल : गायत्री शक्तिपीठ, रामनगर सुपेला, भिलाई.

रायपुर **दि :** 28-29 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9329644433

बिलासपुर **दि :** 30 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9425530470

नांदेड **दि :** 23 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 8806665557

हैदराबाद **दि :** 24-25 तथा 28 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9885058771

विशाखापट्टनम **दि :** 26 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9885058771

विजयवाडा **दि :** 27 अक्तूबर **समय और स्थल** की जानकारी के लिए **संपर्क :** 9885058771

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

दिल्ली

दि. **२५-२६ सितम्बर** (शुक्र-शनि), शाम ५-३० से ८-३० - **सत्संग** तथा **२७ सितम्बर** (रवि) शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
दि. **२८ सितम्बर** (सोम), शाम ५-३० से ८-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : मैडन्स क्राउन बेन्क्वेट्स, B-1, पीरागढ़ी चौक, पीरागढ़ी मेट्रो स्टेशन के सामने, नई दिल्ली. **संपर्क :** 9810098564
विशेष सूचना : दिल्ली सत्संग में जो व्यक्ति बाहर से आ रहे हैं और उन्हें रहने की सुविधा चाहिए, वे सीधे आवास स्थल - **महाराजा अग्रसेन भवन, ज्वाला हेरी चोक, पश्चिम विहार** पर पहुँचे। ज्यादा जानकारी हेतु 9811332206 पर संपर्क करें।

जालंधर

दि. **२९ सितम्बर** (मंगल), शाम ४-३० से ७-३० - **सत्संग** तथा **३० सितम्बर** (बुध) शाम ४ से ७-३०- **ज्ञानविधि**
दि. **१ अक्तूबर** (गुरु), शाम ४-३० से ७-३० - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : देश भगत यादगार होल, जी.टी. रोड, जालंधर. **संपर्क :** 9814063043

अडालज त्रिमंदिर

दि. **३ अक्तूबर** (शनि), शाम ५-३० से ७ - **सत्संग** तथा **४ अक्तूबर** (रवि) शाम ४ से ७-३० - **ज्ञानविधि**
दि. **११ नवम्बर** (बुध), रात ८-३० से १०-३० - **दिपावली के अवसर पर विशेष भक्ति.**
दि. **१२ नवम्बर** (गुरु), सुबह ८-३० से १, शाम ५ से ६-३०-**नूतन वर्ष (वि.सं.) के अवसर पर दर्शन-पूजन**
दि. **१४ व १६ नवम्बर** (शनि व सोम), शाम ४ से ७ - **सत्संग** तथा **१५नवम्बर** (रवि) शाम ४ से ७-३० - **ज्ञानविधि**

हैदराबाद

दि. **२ दिसम्बर** (बुध), शाम ६ से ९ - **सत्संग** तथा **३ दिसम्बर** (गुरु) शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
दि. **४ दिसम्बर** (शुक्र), शाम ६ से ९ - **आप्तपुत्र सत्संग**
स्थल : भारतीय विद्या भवन, 5/9/1105, बशीर बाग, किंग कोठी रोड. **संपर्क :** 9393052836

इन्दौर

दि. **५ व ७ दिसम्बर** (शनि-सोम), शाम ६ से ९ - **सत्संग** तथा **६ दिसम्बर** (रवि) शाम ४ से ७-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : बास्केट बोल कॉम्प्लेक्स, रेसकोर्स रोड, जंजीरवाला चार रस्ता, ओल्ड पलासिया. **संपर्क :** 9039936173

परम पूज्य दादा भगवान का 108वाँ जन्मजयंती महोत्सव - पूणे शहर में

दि. **२४ नवम्बर** (मंगल), शाम ५-३० बजे - **स्वागत समारोह**, शाम ७-२० से ८-३० - **सत्संग**
दि. **२५ नवम्बर** (बुध), सुबह ८ से १, शाम ४-३० से ७ - **जन्मजयंती के अवसर पर पूजन-दर्शन-भक्ति**
दि. **२६ नवम्बर** (गुरु), सुबह १० से १२-३०, शाम ६ से ८-३० - **सत्संग**
दि. **२७ नवम्बर** (शुक्र), सुबह १० से १२-३० - **सेवार्थी सत्संग** तथा शाम ६ से ८-३० - **सत्संग**
दि. **२८ नवम्बर** (शनि), सुबह १० से १२-३० - **सत्संग** तथा शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
दि. **२९ नवम्बर** (रवि), सुबह १० से १२-३०, शाम ६ से ८-३० - **सत्संग**
स्थल : मुलिक पेलेस ग्राउन्ड, कल्याणीनगर, द बीशोप स्कूल के सामने, पूणे. **संपर्क :** 7218473468
सूचना : 1) इस कार्यक्रम में भाग लेने हेतु आपको अपने नजदिकी सत्संग सेन्टर पर और यदि आपके नजदिक में कोई सत्संग सेन्टर नहीं है, तो आपको अडालज त्रिमंदिर रजिस्ट्रेशन विभाग में फोन नं. 079-39830400 (सुबह ९ से १२ तथा ३ से ६ के दौरान) पर दि. २ नवम्बर २०१५ तक रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। 2) इस बार जन्मजयंती महोत्सव के दौरान समग्र सत्संग तथा ज्ञानविधि कार्यक्रम हिन्दी में होंगे। ३) **गद्दे की व्यवस्था नहीं हैं ।** ओढ़ने-बीछाने का चद्दर, एयर पीलो, बेटरी, जरूरी दवाईया साथ में लाएँ। ४) जिनके पास दादा भगवान परिवार का परमनन्ट आइ-कार्ड (पहचानपत्र) है, वे आई-कार्ड अवश्य साथ लेकर आएँ।

सितम्बर 2015
वर्ष-10 अंक-11
अखंड क्रमांक - 119

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2015-2017
Valid up to 31-12-2017
LPWP Licence No. CPMG/GJ/15/2015
Valid up to 31-12-2017
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

आरोपित भाव की वजह से मूल स्वाद चख नहीं पाते

वीतराग क्या कहते हैं? तुझे मार खानी हो तो मारकर आ, तुझे छूट है। तुझे खुद को निंद्य होना हो, तो निंदा कर। अनंत जन्मों से यही किया है। और क्या किया है? और क्या धंधा किया है? लेकिन अब यह 'ज्ञान' है तो पलटेगा, वर्ना पलटेगा नहीं न! यह 'ज्ञान' हमें खुद के दोष दिखा सकता है! और हम मानें या न मानें, वास्तव में दोष अपना ही है। यह १०८ मोतियों की माला किसलिए है? ऐसा एक-एक मोती पर तय कर कि मुझे निंद्य नहीं होना है, यों १०८ हिसाब पूरे कर ले तो भी बहुत है। लकड़ी की माला फिराने से क्या चाय की तलब मिट सकती है? संसार खारा नहीं है लेकिन उसका आरोपित भाव है, उसकी वजह से मूल टेस्ट नहीं आ पाता। इन दादा को समझ लें तो काम हो जाएगा !

-दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner. Printed at Amba Offset, Basement, Parshvanath Chambers, Usmanpura, Ahmedabad-380014.